फ़ेहरिस्त

मज़मून	मज़मून निगार	पेज न.
इस्लाम दीने अम्न व आश्ती (इदारिया)	इदारा	5
इस्लाम की दाख़िला और ख़ारजा पॉलिसी	ख़तीबे आज़म[ता–व–सराह]	8
जांकनी की सख़्तियों को आसान बनाने....	आयतुल्लाह करीमी जहरमी	11
ख़ुदसाज़ी सहीफ़ए सज्जादिया की रौशनी में	हुज्जतुल इस्लाम अहमद तुराबी	18
बुशरे हाफ़ी	मौ0 सै0 असद अली	21
नमाज़ इमाम हुसैन[अ0] का एक अहम पैग़ाम	मौ0 जौन रज़ा आज़मी	23
मद्हे इमाम ज़ैनुल आबेदीन[अ0]	अल्लामा कलीम इलाहाबादी	25
इस्तेफ़ूताआत	मौ0 फ़ीरोज़ अली बनारसी	26
इस्लामी दुनिया से...	मौ0 फ़ीरोज़ अली बनारसी	29

अगर इस खाने में x का निशान बना हो तो आपकी Subscription money ख़त्म हो चुकी है, लिहाज़ा Subscription money रवाना करके मिम्बरशिप Renew करा लें।

जब भी आप किसी को हिन्दी मासिक की मेम्बरशिप फ़ीस दें तो रसीद ज़रूर ले–लें।

इदारे का मक़ाला निगार हज़रात की राय से मुत्तफ़िक़ होना ज़रूरी नहीं है।

कम्पोज़िंग एण्ड डिज़ाइनिंग : नैयर महदी, मो0–8175924587

(इदारिया)

इस्लाम दीने अम्न व आश्ती

शैतान और उसके इन्सानी और जिन्नाती चेले हमेशा यही कोशिश करते हैं कि दीन की तस्वीर इस तरह पेश करें कि लोग तज़बजुब का शिकार हो जाएं या दीन से दस्तबरदार हो जाएं।

आज के दौर में शैताने रजीम ने अपने लाह व लश्कर की मदद से दीने ख़ुदा की तस्वीर ग़ैर मुस्लिम दुनिया के सामने इस तरह पेश की है कि अक्सरीयत बेदीनी के दलदल में अगरचे फंसी हुई है और अबरेशम के कीड़े की तरह ख़ुद अपने ही बेदीनी के घरौंदे में घुटघुट कर हलाक हो रही है, मगर अक़्ल व हिकमत, वुस्अ़त व रहमत और बशरीयत के निजात दहिन्दा दीने इस्लाम की तरफ़ देखने को भी तैयार नहीं हैं। अक्सर लोगों की अक़्ल उनकी आंखों में होती है यानी जो उनको दिखाया जाता है, या जो वह देखते हैं, उसी पर अपने नज़रिये की बुनियाद रखते हैं।

इब्लीस ताक़तों ने इस अक़्ल व मन्तिक़ के दौर में दीने अक़्ल व मन्तिक़ यानी इस्लाम का जो चेहरा ख़ास तौर पर ग़ैर–मुस्लिम और मग़रिबी दुनिया को दिखाया है, वह इस्लाम के हक़ीक़ी चेहरे से बिल्कुल मुख़्तलिफ़ है। इस्लाम में अक़्ल पर बेहद ज़ोर दिया गया है। शैतान ने मुसलमानों के आईने में इस्लाम को सबसे ज़्यादा ग़ैर माकूल और सबसे बड़ा दुश्मने अक़्ल बना कर पेश किया। इस्लाम में अल्लाह की मख़्लूक़ात से मुहब्बत व शफ़क़त को ख़ुद ख़ालिक़ से मुहब्बत की निशानी क़रार दिया गया है और हर काम करने से पहले मुसलमानों को रहमान व रहीम का विर्द कराकर रहमत को ख़ुसूसी तवज्जो का मरकज़ बनाया गया है जो आज की दुनिया में शैतान ने दीने इस्लाम को सबसे बड़ा तशद्दुद और बरबरीयत व आमरीयत का आईन बनाकर अहले दुनिया को धोखा दिया है।

इस्लाम अमन व अमान, मेल–मिलाप और इत्तेहाद व यकजहती को दीन का अटूट हिस्सा क़रार देता है। मगर शैतान ने पूरी दुनिया में फैली हुई नाअमनी, क़त्ल व ग़ारतगरी और लड़ाई झगड़ों की सारी ज़िम्मेदारी इस्लाम के सर मंढ दी है। इस तरह कि इस्लाम और नाअमनी लाज़िम व मलज़ूम बन जाएं। यानी लोग जहां कहीं भी ब्लास्ट की ख़बर सुनें, बेसाख़्ता उनकी ज़हन में इस्लाम का नाम आए।

इस्लाम से ज़्यादा इन्सान या किसी भी मख़लूक़ की जान से हमदर्दी किसको हो सकती है?! जहां एक नफ़्स का क़त्ल पूरी इन्सानियत के क़त्ल के बराबर समझा जाता हो और जहां बिला ज़रूरत किसी कीड़े मकोड़े को मारने की भी इजाज़त न हो, बल्कि शैतान और उसके चेलों ने इस्लाम को वहशत–तरीन ख़ूंख़ार दरिन्दों से भी ज़्यादा भयानक ख़तरा के रूप में उजागर किया है। यह चन्द नज़ारे दीने ख़ुदा की उस तस्वीर के हैं जिसे शैतान ख़ुसूसी तौर पर ग़ैर–मुस्लिमों और अहले मग़रिब को दिखाकर दीन को इतना घिनौना और डरावना बनाकर दिखाता है कि वह मरते मर जाएं, मगर इस्लाम के सायए रहमत में पनाह लेने का ख़्वाब भी न देखें।

शैतान निहायत मंझा हुआ चालबाज़ और शातिर है जो मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ के वार करता है। लिहाज़ा मुसलमानों और दींदारों को दीन की तस्वीर क़दरे बदलकर दिखाता है। कुछ को रहमते परवरदिगार के वसीअ् व अरीज़ (बड़ा) सहरा में हलाक करता है कि इतना डरडर कर ज़िन्दगी गुज़ारने की क्या ज़रूरत, दुनिया की लज़्ज़तों से भरपूर फ़ायदा उठाओ, अल्लाह की राफ़त व रहमत कब काम आएगी?! किसी गिरोह को उस कज फ़िक्री में मुब्तेला कर देता है कि गुनाह करो ताकि तौबा में सोज़ व गुज़ार पैदा हो और तुम सच्चे तौबा करने वालों के अज्र व पादाश के हक़दार बन जाओ। कुछ को अक़्ल के नाम पर फ़रेब देकर आज़ाद ख़याल और मुख़ालिफ़े शरअ् बना देता है, कुछ को इरफ़ान और सूफ़ियत के नाम पर क़वानीने इलाही से बेनियाज़ बल्कि परे कर देता है। कुछ के दिल व दिमाग़ पर जहन्नम की ऐसी छाप डालता है कि उनकी ज़िन्दगी में मायूसी के अंधेरों के सिवा कुछ नहीं बचता और कुछ लोगों को दीन व शरीअ़त की मिन व अन पाबन्दी के नाम पर अक़्ल से पैदल, बल्कि अंधा करके हक़ीक़त या फ़हम व शुऊर से बेदख़ल करके तंग नज़री की अंधेरी कोठरी में इस तरह बन्द कर देता है कि वह इन्सान होते हुए कुंए के मेंढक बन जाते हैं, या उनकी ज़िन्दगी भी अजरीन हो जाती है और दूसरे भी उनकी शिद्दत पसन्दी और कट्टरपंथी मिज़ाज के सबब दीन से उजाट हो जाते हैं। इन तमाम शैतानी फ़ितनों से राहे निजात कश्तिये निजात पर सवार हो जाने के अलावा कहीं और नहीं मिल सकती।

बहुक्मे रब्बे रसूले अकरम[स0] ने जिस अज़ीमुल मरतबत हस्तियों को इस उम्मत के लिए सफ़ीनए नूह क़रार दिया है और जिनका काम फ़िक्री, अक़ाएदी, अमली, सियासी और दूसरे तमाम फ़ितनों के समन्दर यानी इस दुनिया की हर मुम्किन गहराइयों से बशरीयत को निजात दिलाकर मन्ज़िले मक़सूद तक पहुंचाता है, उन्हीं में से एक इमाम ज़ैनुल आबिदीन[अ0] भी हैं। आपकी हयाते तय्यबा मुस्लिम, ग़ैर–मुस्लिम और दुनिया को दीने हक़ से बेज़ार करने की तमाम कोशिशों और शैतानी मन्सूबों का मुंह तोड़ जवाब है। जिन अंधेरे रास्तों से शैतान इन्सान को गुमराह करता है, इमाम सज्जाद[अ0] ने उन सब पर अपनी जगमगाती सीरत और अज़मते किरदार की क़िन्दीलें लगा दी हैं जिनकी रौशनी पर देखने वाला इस्लाम के हक़ीक़ी और नूरानी चेहरे को देखकर इस्लाम के उमवी व अब्बासी व शैतानी मुखौटों को बाआसानी पहचान सकता है। इस्लाम की अक़्ल व हिकमत को उजागर करने के लिए सय्यदे सज्जाद[अ0] ने कूफ़ा व शाम के ख़ुतबात और बेमिसाल हिकमत व तदबीर के वह नमूने छोड़े हैं जो क़यामत तक बशरीयत के लिए उस्वए हसना रहेंगे। रवायतों के मुताबिक़ इमाम सज्जाद[अ0] के इल्म व हिकमत के दरवाज़ा अमीरुल मोमिनीन[अ0] से सबसे ज़्यादा शबाहत रखते थे।

अल्लाह से मुहब्बत और गहरा राबिता क्योंकर हो, इमाम सज्जाद[अ0] ने अपने तवील सजदों, घट्टों, सहीफ़ए सज्जादिया, दुआए अबू हमज़ा और अज़ीम मुनाजातों के ज़रिया समझाया, जहां इरफ़ान और मानवियत के मतवालों को सूफ़ियों और ढोंगियों के ढकोसलों से बचाकर मारेफ़ते रब की हक़ीक़त और इरफ़ाने हक़ीक़ी के चश्मए ज़लाल तक पहुंचाया जाता है।

दीने इस्लाम में अल्लाह के बन्दों से मुहब्बत व शफ़क़त की अज़मत देखना हो तो वाक़ए हेरा के बाद अहले मदीना के साथ इमामे सज्जाद[अ0] की नवाज़िश और तीमारदारी पर नज़र डालें जहां पर हर तरह से टूटे हुए अहले मदीना के लिए मायूसियों के अंधेरे में उम्मीद

का सूरज बनकर जगमगा रहे हैं। इन्सान तो इन्सान, जानवरों से भी प्यार व मुहब्बत की वह आला मिसालें क़ायम की हैं कि आज की तरक़्क़ी याफ़्ता दुनिया भी हैरान रह जाती है।

एक नाक़ा पर 25 बरस तक सवारी की, मगर इस तवील अरसा में एक छड़ी भी उस नाक़ा को न मारी और आपकी शहादत के बाद उस नाक़ा ने भी दारे फ़ानी को छोड़ दिया। जिस दीन के रहनुमा जानवरों से इतना प्यार करते हों क्या उस दीन के मानने वाले बेख़ता इन्सानों का ख़ून बहा सकते हैं? दीन लाठी डण्डे, शिद्दत पसन्दी और हटधर्मी का नाम नहीं है बल्कि मज़लूमों और बेसहारों की आस है। दीन कभी भी उम्मीद का दामन छोड़ने की बात नहीं करता। इस्लाम हलाकत से डराता ज़रूर है, मगर साहिले निजात तक पहुंचाने की उम्मीद हरआन क़ायम रखता है।

इमामे सज्जाद[अ0] से कहा गया कि हसन बसरी का कहना है कि मुझे हलाक होने वालों पर तअज्जुब नहीं कि वह हलाक कैसे हुए या होंगे, बल्कि तअज्जुब अहले निजात पर है कि वह निजात याफ़्ता कैसे हुए या होंगे! इमाम[अ0] ने फ़रमाया कि मगर हम कहते हैं कि तअज्जुब अहले निजात के निजात पाने पर नहीं, बल्कि हलाक होने वालों की हलाकत पर है कि अल्लाह की रहमतों की वुस्अ़त के बावजूद वह वादिये हलाकत में कैसे पहुंच गए?!

इमाम[अ0] कभी कभी फ़रमाते थे कि वाए हो उन लोगों पर जिनकी इकाइयां उनकी दहाइयों पर ग़ालिब आ जाएं और जब वज़ाहत तलब की जाती है तो फ़रमाते हैं कि अल्लाह ने कुरआने मजीद में एक नेकी पर दस सवाब और एक बुराई पर एक ही गुनाह का वादा किया है और जहन्नम में वही जाएंगे जिनकी बुराइयों का वज़न नेकियों से ज़्यादा होगा।

तमाम अइम्मए अहलेबैत में इमामे सज्जाद[अ0] अमीरुल मोमिनीन[अ0] से सबसे ज़्यादा मुशाबेह थे। अगरचे अपने जद्दे बुज़ुर्गवार की तरह आपको उलूमे आले मुहम्मद[अ0] दुनिया के सामने पेश करने का मौक़ा नहीं मिला, मगर आपकी बेशक़ीमत मीरासें ख़्वाह दुआओं के मजमूए हों या चन्द ख़ुतबात, नीज़ फ़िक़्ही व इल्मी और अख़्लाक़ी व एतेक़ादी हदीसों के गुलदस्ते हों, या अबू हमज़ा सुमाली, जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी, सईद बिन जुबैर, अबू ख़ालिद कलबी, रय्यान बिन तग़लब जैसे माए नाज़ शागिर्दों की तरबीयत हो, सभी से आपकी इल्मी व तरबीयती मक़ासिद की तर्जुमानी होती है।

इमाम ज़ैनुल आबिदीन[अ0] और आले मुहम्मद[अ0] के इल्मी और तरबीयती मिशन को अस्रे हाज़िर में पूरी दुनिया में आम करने के लिए और फितनों के समन्दर से तमाम इन्सानों ख़ुसूसन अपनी क़ौम व मिल्लत को बचाने के लिए ख़तीबे आज़म[ता–ब–सराह] ने इमामे सज्जाद[अ0] की यौमे विलादत यानी 15 जुमादल–ऊला 1388 हिजरी की मुबारक तारीख़ में इदारा तनज़ीमुल मकातिब की मुबारक तहरीक की बुनियाद रखी जो मासूमीन[अ0] की इनायतों के तुफ़ैल आज सिर्फ़ एशिया ही नहीं, बल्कि दुनिया की सबसे बड़ी और हमागीर शीयत की पनाहगाह में तब्दील हो गई है।

तमाम क़ारेईन से गुज़ारिश है कि तनज़ीमुल मकातिब के ख़िदमात से ख़ुद को आगाही रखें, दूसरों को आगाही फ़राहम करें और हर मुम्किना माली, इल्मी और फ़िक्री तआवुन करके इस कारवाने हिदायत से वाबस्ता होकर सआदते दारैन, रिज़ाए परवरदिगार और ख़ुशनूदिये मुहम्मद व आले मुहम्मद[अ0] हासिल करें। इदारा इस शुमारा के तमाम मुआवेनीन बिल्ख़ुसूस अहले क़लम हज़रात को शुक्रगुज़ार है और सभी के नेक तौफ़ीक़ात में इज़ाफ़ा का मुतमन्नी है। ●●●

इस्लाम की दाख़ेला और ख़ारेजा पॉलिसी

अज़ तबर्रुकाते ख़तीबे आज़म[ता–ब–सराह]

जैसे–जैसे रात कटने लगी वैसे–वैसे समझदार सोचने लगे कि ख़ैमे में पड़े रहे तो पता नहीं कि नबीये करीम[स0] ख़ैमे से बाहर तशरीफ़ लाकर किसे देखें और अलम उसके हवाले कर दें?!

लिहाज़ा सबसे पहले पहुंचा जाए, जब आंहज़रत अलम के तशरीफ़ लाएं तो सिर्फ़ हमें देखें। सारे मुसलमानों को यही फ़िक्र थी कि रसूले अकरम[स0] हमें देखें।

मुसलमान जल्दी जल्दी नबीये अकरम[स0] के ख़ैमे के सामने पहुंचे। कुछ लोग आगे आगे पहुंचे और जो रह गए वह पीछे पहुंचे। जो पीछे पहुंचे उन्हें डर था कि 'कहीं ऐसा न हो कि आगे वाले खड़े हो जाएं और नबीये अकरम[स0] हमें न देखें तो वह लोग ऊंची जगह तलाश कर रहे थे'

रसूले खुदा[स0] ने नमाज़ अदा की, वज़ीफ़ा पढ़ा, सूरज निकला, ख़ैमे का पर्दा उठा और नबीये अकरम[स0] हाथ में अलम लेकर बाहर तशरीफ़ लाए। मुसलमानों ने देखा कि अलम नबीये अकरम[स0] के दस्ते मुबारक में आगे है, नबीए अकरम[स0] पीछे हैं। मुसलमानों की नज़र आंहज़रत पर नहीं, आपके दस्ते मुबारक पर है।

एक बार नबीये अकरम[स0] ने अलम ज़रा आगे बढ़ाया तो जो जहां खड़ा था वहीं से आगे बढ़ा। आपने अलम ज़रा पीछे कर लिया, सब पीछे हो गए। नबीये अकरम[स0] ने तीन बार अलम आगे बढ़ाया, तीनों बार मजमा आगे बढ़ा। अलम पीछे हटाया, मजमा पीछे हटा।

जो छोटे क़द वाले थे, उन्होंने सोचा 'मुसलमान मुसलमान सब बराबर हैं, तुम लम्बे हो तो क्या हुआ?' वह पंजों के बल खड़े हो गए। 'अब तो हैं बराबर!' बड़ी बेचैनी की बात है। आरज़ू का मामला है। ख़ाली अलम नहीं है, उसके साथ कितने ओहदे भी मिल जाएंगे।

जो आगे थे उन्हें ख़तरा हुआ कि आंहज़रत कहीं दूर न देखने लगें। हम सामने खड़े हैं, कभी चिराग़ तले अंधेरा भी हो जाता है। तो वह नबीये अकरम[स0] के पास से यूं गुज़रने लगे कि आपके जिस्म से जिस्म मस करके निकले ताकि अब तो नबूवत बेदार हो जाए। एक बात सुना दूं।

इस बात को अच्छी तरह समझने के लिए यह वाक़ेआ काफ़ी मददगार साबित हो सकता है कि एक मस्जिद में एक साहब बड़े ख़ुलूस से दुआ मांगते थे। दुआएं भी लम्बी थीं। हाथ भी लम्बे थे। नमाज़ पढ़ कर लम्बे लम्बे हाथ फैलाकर, आंखें बन्द करके रोज़ पुकारते :

या रब्बुल आलमीन! ऐ मेहरबान! या ग़फ़्फ़ार! ऐ गुनाहों के माफ़ करने वाले!

70 बार अल्लाह का नाम लेते थे और 70 बार उसका उर्दू में तर्जुमा करते थे। नाम तो पुकारते थे रोज़ तर्जुमा करते थे। मगर जब दुआ मांगते थे तो चुपके चुपके ताकि मस्जिद में कोई और मुसलमान दुआ सुनकर मांग न ले।

कड़क कर बोले :

या अल्लाह! ऐ ख़ुदा! ऐ रब्बुल आलमीन!

जो शख़्स बग़ल में नमाज़ पढ़ रहा था वह चौक गया। उसकी नमाज़ टूट गई। लोगों ने कहा :

बड़ी मुश्किल है, दुआ मांगते हैं, मना भी नहीं कर सकते। कड़क कड़क के मांगते हैं, तो नमाज़ में ख़लल होता है। सोचा कि उन्हें समझाएं कि भाई! अल्लाह को पुकारते हो तो या तो अरबी में पुकार लो :

रब्बुल आलमीन, रहमान, ग़फ़्फ़ार, सत्तार, तव्वाब। या उर्दू में पुकार लो :

गुनाहों को माफ़ करने वाले, रोज़ी के देने वाले।

उन्होंने जवाब में कहा :

हम तो दोनों ज़बान में पुकारेंगे! पूछा क्यों? कहा :

मामला दुआ का है, इसलिए अरबी में पुकार के तर्जुमा कर देते हैं कि कहीं ऐसा न हो कि ख़ुदा न समझे।

इससे मालूम हुआ कि कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो अल्लाह को 'अल्लाह' मानकर दुआ भी मांगते हैं और अल्लाह को नासमझ समझ कर उसे समझाते थी हैं!

मुझे मैदाने ख़ैबर में ऐसे ही मुसलमान नज़र आ रहे थे। नबी[स०] को 'नबी' भी मानते थे, उनसे अलम भी लेना चाहते थे और ऊंचे होकर, जिस्म रगड़ रगड़ कर समझा भी रहे थे कि 'या नबी अल्लाह! हम हैं हक़दार'।

जब नबीये अकरम[स०] को 'नबी' मानते थे तो जो हक़दार होगा आंहज़रत उसी को अलम देंगे, यह अपने आपको पेश क्यों कर रहे थे?!

नबीये अकरम[स०] ने अलम लेकर मजमा के एक एक आदमी पर नज़र डालना शुरू की। बस जिससे आपकी नज़र मिली उसे यक़ीन हुआ कि अलम हमें मिला। जैसे ही नज़र मिली, वैसे ही उसने कांधे ऊंचे किए। आंहज़रत दूसरे को देखने लगे, उसने नज़र खड़ी करके दूसरे को देखा। हमको नहीं मिला तो क्या तुमको मिलेगा? नबी[स०] ने यहां से वहां तक पूरे मजमे को देख डाला। किसी को अलम नहीं दिया। मजमा सोच रहा था कि आख़िर किसे अलम देंगे? रसूले अकरम[स०अ०] ने फ़रमाया : अली[अ०] कहां हैं?

जो अली[अ०] का नाम सुनकर चुप हो जाया करते थे, वो आज सबसे पहले बोले :

या रसूल अल्लाह[स०]! उन्हें न बुलाइये, वह बीमार हैं।

यानी वह बीमार हैं और हम हाज़िर हैं। उम्मत कह रही थी 'अली[अ०] बीमार हैं न बुलाइये, पैग़म्बरे अकरम[स०] ने फ़रमाया : नहीं! अली[अ०] कहां हैं? लोगों ने कहा : हुज़ूर[स०]! हमने रात को देखा उनकी आंखें सुर्ख़ हो गई हैं। आंखों में बड़ा दर्द था।

आपने फ़रमाया : अली[अ०] को बुलाओ।

गोया नबीये अकरम[स०] यह बताना चाहते हैं कि जो तुम्हारी नज़रों में बीमार है वही इस्लाम का मसीहा है।

जनाबे सलमान[अ०] गए और अली[अ०] को बुलाकर लाए। इस हालत में कि अली[अ०] सलमान के कांधों पर हाथ रखकर आए। नज़र काम नहीं कर रही थी। कोई और होता तो कह देता कि रसूल[स०] से कहना कि मेरी आंखें काम नहीं कर रही हैं तो मैदान में क्या जाऊंगा?

अली[अ०] ने बीमारी का कोई उज़्र नहीं किया। इसलिए कि ज़ुलअशीरा में जब मदद का वादा किया था तो क़ैद नहीं लगाई थी कि जब अच्छा होगा तभी मदद करूंगा। बे–क़ैद व शर्त मदद का वादा किया था, आज बे–शर्त हाज़िर हो गए। नबीए अकरम[स०] ने फ़रमाया : अली[अ०]! कैसे हूं?

अर्ज़ किया : आंखें आशूब कर आई हैं मगर तामीले हुक्म के लिए हाज़िर हूं।

फ़रमाया : अली[अ०]! मेरे ज़ानू पर सर रखो। आपने ज़ानू पर सर रखा, आंहज़रत ने लुआबे दहन लगाया और उंगली अली[अ०] की आंखों में फेरे। फिर भी

अली[अ0] की आंखें बीमार न हुईं।

आपने अली[अ0] को अलम दिया। आपको तनहा नहीं भेजा। जो लश्कर कल गया था वही आज भी साथ साथ है।

जब नबीये अकरम[अ0] ने इमाम अली[अ0] को अलम दिया तो अर्ज़ किया : मौला! कब तक लड़ूंगा?

फ़रमाया : तब तक लड़ना जब तक फ़तह न हो।

अली[अ0] अलम लेकर चले। लश्कर वही था सिर्फ़ सरदारे लश्कर बदला। तीन दिन पहले जो लश्कर गया था, वह ख़ुदा को मानता था, नबी[स0] का कलमा पढ़ता था, कुरआन को किताबे इलाही समझता था, नमाज़ें अदा करता था, इस्लाम की हर बात मानता था। जो अक़ीदे पहले दिन थे, वही अक़ीदे दूसरे दिन थे, वही अक़ीदे तीसरे दिन भी थे और वही अक़ीदे आज चौथे दिन भी थे। ख़ुदा और रसूल[स0] व कुरआन और क़िब्ला का मानने वाला मुसलमान पहले तीन दिन भी गया था और आज चौथे दिन भी गया, मगर सूरते हाल यह है कि पहले मुसलमान मैदान से भागता रहा, हालांकि उस ख़ुदा का सजदा गुज़ार था, उस रसूल[स0] का कलमा–गो था, उस कुरआन पर ईमान था जिसमें लिखा है कि मैदाने जिहाद से भागना गुनाहे कबीरा है, उसी कुरआन को सीने से लगाए रहा, मगर मैदान से भागा।

ज़ाहिर है कि जब मैदाने जिहाद से मुसलमानों ने क़दम हटाए तो ख़ुदा व पैग़म्बर[स0] की बात की नाफ़रमानी की, कुरआन के हुक्म के ख़िलाफ़ तर्ज़े अमल एख़्तियार किया। तो नबीये अकरम[स0] को गवारा नहीं था कि इस्लाम की शिकस्त दुश्मन की नज़र के सामने आए, मगर वह नबी[स0] जो जनाबे मूसा[अ0] और जनाबे ईसा[अ0] के दीन को मिटते देख चुके थे, वह चाहते थे कि तजरेबा करा दूं कि इस्लाम की दाख़ेला पॉलिसी कामयाब कब होती है और नाकाम कब होती है? मुसलमानो! तुम बाद में सोचोगे, जब मैं न रहूंगा, तो मैं तुम्हें अपनी ज़िन्दगी में तजरेबा करा दूं। मैं ज़िन्दा हूं, ख़ैबर के मैदान में मौजूद हूं।

मगर तुम्हारा हाल यह है कि तुम्हारा नबी[स0] ज़िन्दा है, तुम्हारे मजमे में मौजूद है, तुम्हारी गोद में कुरआन भी है, तुम्हारे सीने में इस्लाम भी है, मगर मैं तीन दिन के लिए ख़ैमे में अगर बीमार पड़ गया और तुमने अपनी मर्ज़ी से लड़ाई का सरदार बनाया, तुम गए, अपना सरदार ले गए, इस्लाम की हर बात मानकर गए, मगर जब तुम भागे तो तुमने इस्लाम का रास्ता छोड़ दिया।

इस्लाम की दाख़ेला और ख़ारजा पॉलिसी में इन्तेशार हुआ या नहीं?

पैग़म्बरे अकरम[स0] ने फ़रमाया :

मेरे बाद का सवाल तो बाद में सोचना, मेरी ज़िन्दगी में मेरी आंखों के सामने मुसलमान ख़ुदा व रसूल[स0] और कुरआन व क़िब्ला को मानकर इस्लाम का रास्ता छोड़ देता है। न उसे ख़ुदा का ख़याल आता है, न ही मेरी मौजूदगी का ख़याल आता है। न ही उसे कुरआन का ख़याल है। कोई बात उसे मैदान में रोक नहीं पाती है। यानी मेरी आंखों के सामने मुसलमान पलट रहा है, भाग रहा है और तीन दिन तक यही होता रहा। मगर जब मैंने चौथे दिन तुम्हारे साथ अली[अ0] को भेजा तो अगरचे लश्कर वही था, ख़ुदा, क़यामत, कुरआन और इस्लाम पर अक़ीदा वही था, मगर अब जो मुसलमान गया तो भागा नहीं।

इससे मालूम हुआ कि किरदार सिर्फ़ अक़ीदए तौहीद, नबूवत, कुरआन पर ईमान, इस्लाम पर ईमान लाने से नहीं बनता, किरदार बनता है सरदार से। जैसा सरदार वैसा किरदार।

जब तक तुमने सरदार अपने जैसा रखा, उस वक़्त तक इस्लाम की हर बात

बाक़ी पेज 20 पर...

जांकनी की सख़्तियों को आसान बनाने के तरीक़े

आयतुल्लाह करीमी जहरमी

हालते एहतेज़ार की मुश्किलात और सख़्ती को दूर करने वाले अवामिल व असबाब

जांकनी के सख़्ती और ख़तरनाक हालत में इन्सान की राहत व आराम के लिए दो तरह के आमाल व आदाब हैं, जिनका ज़िक्र अइम्मए मासूमीन[अ0] की रवायात में होता है और आमाल व आदाब यक़ीनन मुस्बत असर के हामिल होंगे।

पहली क़िस्म के वह आमाल व आदाब हैं जो ख़ुद इन्सान से मुतअल्लिक़ हैं और दूसरी क़िस्म के वह आमाल व आदाब हैं जो दूसरे लोग हालते एहतेज़ार में उसके लिए अंजाम देते हैं।

क़िस्मे अव्वल के आमाल

1. सूरह यासीन की तिलावत

इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ0] से मन्क़ूल है :

जो शख़्स अपनी ज़िन्दगी में एक बार भी सूरह यासीन की तिलावत करेगा, ख़ुदा वन्दे आलम मौत के सकरात और ख़ौफ़ व हरास को उसके लिए आसान बना देगा। (सवाबुल आमाल, पेज 139)

2. सूरह हुजरात की तिलावत

नबीये अकरम[स0] से मन्क़ूल है :

जो शख़्स सूरह हुजुरात की तिलावत करेगा, ख़ुदा वन्दे आलम सकरातुल मौत को उसके लिए आसान कर देगा। (मिस्बाहे कफ़अ्मी, पेज 445)

3. सिलए रहेम और हुस्ने सुलूक

हज़रत इमाम अली नक़ी[अ0] फ़रमाते हैं कि हज़रत मूसा[अ0] ने ख़ुदा वन्दे आलम से अर्ज़ किया :

ख़ुदाया! जो अपने क़राबतदारों के साथ नेक बरताव करता है उसका अज्र व सवाब क्या हे?

परवरदिगारे आलम ने फ़रमाया :

ऐ मूसा! मैं उसकी मौत को टाल दूंगा, मौत की सख़्तियों को उस पर आसान कर दूंगा और जन्नत के फ़रिश्ते उसे आवाज़ देंगे : हमारी जानिब आओ जन्नत में जिस दरवाज़ा से दाख़िल होना चाहते हो दाख़िल हो जाओ। (अमाली शेख़ सुदूक़, पेज 125)

4. मां–बाप से हुस्ने सुलूक

दाऊद रक़्क़ी कहते हैं : मैंने इमामे जाफ़रे सादिक़[अ0] को यह फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स चाहता है कि ख़ुदा उस पर मौत की सख़्तियों को आसान कर दे, तो वह अपने क़राबतदारों के साथ नेकी करे और अपने मां–बाप के साथ मेहरबान व नेक रहे, जब वह ऐसा करेगा तो ख़ुदा मौत की सख़्तियों को उस पर आसान कर देगा और जब तक ज़िन्दा रहेगा कभी भी तंगदस्त और फ़क़ीर नहीं होगा। (अमाली शेख़ सुदूक़, जिल्द 2, पेज 36)

इस हदीसे शरीफ़ की रौशनी में क़राबतदारों से गर्म राबिता रखना और मां–बाप के साथ नेक बरताव और हुस्ने सुलूक करना सकरातुल मौत

को कम करने वाले दो अहम और मोअस्सिर असबाब हैं। जो शख़्स अपनी ज़बान में क़राबतदारों से नेक, माकूल और इन्सानी बरताव करता है ख़ुदा मौत की सख़्तियों को उस पर आसान कर देता है। उसके अलावा वह ज़िन्दगी में कभी भी गुरबत और तंगदस्ती का शिकार नहीं होगा।

क़ाबिले ज़िक्र बात है कि जिस तरह क़राबतदारों से हुस्ने सुलूक और मां–बाप के साथ नेकी सकरातुल मौत को आसानी और हालते एहतेज़ार में आसानी का सबब बनता है इसी तरह रिश्तादारों से बदसुलूकी और वालेदैन के साथ नेकी न करना मौत की सख़्तियों को मज़ीद सख़्त बनाने वाली हैं।

5. औक़ाते नमाज़ की पाबन्दी

हज़रत अली[अ0] से मन्कूल है कि रसूले ख़ुदा[स0] ने इरशाद फ़रमाया :

कोई भी बन्दा ऐसा नहीं है जो कि औक़ाते नमाज़ की पाबन्दी करता है मगर यह कि मैं जांकनी के आलम में उसके ग़म के ख़त्म होने और आतिशे जहन्नम से निजात की ज़मानत लेता हूं। एक दिन वह था जब हम ऊंटों के निगरां थे लेकिन आज सूरज का निगरां हैं (ताकि नमाज़ को उसके वक़्त पर अदा करें) (अमाली शेख़ मुफ़ीद, पेज 136, मजलिस नम्बर 16)

6. दुआए मूसा[अ0] पढ़ना

सकरातुल–मौत को आसान बनाने वाले असबाब में से एक दुआए हज़रत मूसा[अ0] को पढ़ना भी है। रवायात में वारिद हुआ है कि जब फ़िरऔन ने इजाज़त दी कि मूसा और हारून[अ0] उसके दरबार में दाख़िल हों, तो वह दोनों हज़रात दाख़िल हुए और उसके सामने खड़े हुए। उस वक़्त हज़रत मूसा[अ0] ने यह दुआ पढ़ी :

.....

जब जनाबे मूसा[अ0] ने यह दुआ पढ़ी, तो वह ख़ौफ़ जो आपके दिल में था, वो अमन व सुकून में बदल गया। इसी तरह जब भी कोई ख़ौफ़ज़दा हो और वह यह दुआ पढ़े, तो ख़ुदा उसके ख़ौफ़ व वहशत को दूर कर देगा और उसे अमन व इत्मीनान अता फ़रमाएगा। उसका हुज़्न व मलाल दूर कर देगा और मौत की सख़्तियों को उसपर आसान कर देगा।

7. बरादराने दीनी के लिए लिबास फ़राहम करना

बाअसानी जान देने के असबाब में से एक नंगों का लिबास पहनना भी है। जबल बिन दराज से रवायत है कि इमाम जाफ़रे सादिक़[अ0] ने फ़रमाया कि जो शख़्स अपने बरादरे दीनी को सर्दी या गर्मी का लिबास पहनाएगा, तो ख़ुदा पर लाज़िम है कि उसे बहिश्ती पोशाक पहनाए और सकराते मौत को उस पर आसान कर दे। (अलकाफ़ी जिल्द 2, पेज 204)

8. अमीरुल मोमिनीन[अ0] से इश्क़

सकरातुल मौत को आसान बनाने वाले सबसे मोअस्सिर असबाब में से एक सबब हज़रत अली[अ0] से इश्क व मुहब्बत है। रसूलुल्लाह एक मुफ़स्सल हदीस में फ़रमाते हैं :

आगाह हो जाओ कि जो भी अली[अ0] से मुहब्बत करेगा, ख़ुदा उस पर मौत की सख़्तियों को आसान कर देगा और उसकी क़ब्र को जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ क़रार देगा। (बशारतुल मुस्तफ़ा पेज 37)

सैय्यद इस्माईल हुमैरी का हालते एहतेज़ार

सैय्यद हुमैरी का तअल्लुक़ पहले कीसानिया फ़िरक़े से था। यानी उनका अक़ीदा यह था कि इमाम हुसैन[अ0] के बाद आपके भाई जनाबे मुहम्मद हनफ़िया इमाम हैं। उन्होंने इस बाअमल अक़ीदा के सिलसिले में अशआर भी कहे थे। लेकिन इमाम सादिक़[अ0] के दस्ते मुबारक पर तौबा की। उनका हालते एहतेज़ार भी निहायत तअज्जुब ख़ेज़ था।

हुसैन बिन मौन कहते हैं : मैं इस हालत में अपने भाई के

पास पहुंचा कि वह ज़िन्दगी के आख़िरी लमहात बसर कर रहे थे। कुछ उस्मानी लोग भी उनके पास मौजूद थे। सै0 हुमैरी ख़ूबसूरत और कुशादा पेशानी मर्द थे। अचानक उनके चेहरे पर एक सियाह नुक़्ता ज़ाहिर हुआ और बढ़ना शुरू हुआ और बढ़ता ही गया। यहां तक कि पूरे चेहरे को घेर लिया। वहां मौजूद शिया हज़रात इस माजरे से ग़मगीन हुए और उध ार नासिबी अफ़राद और दुश्मनाने अहलेबैत[अ0] ख़ुश हुए और उनकी शमातत करने लगे। फिर अचानक उनके चेहरे पर एक सफ़ेद नुक़्ता नमूदार हुआ और आहिस्ता आहिस्ता बढ़ना शुरू हो गया और चेहरा नूरानी हो गया। उस वक़्त सैय्यद हुमैरी मुस्कुराए और ये अशआर कहे :

वह लोग झूठ बोलते हैं कि जो यह गुमान करते हैं कि अली[अ0] अपने मुहिब को मुश्किलात से निजात नहीं दिलाते हैं। बेशक ख़ुदा की क़सम मैं वारिदे बहिश्त हो गया। परवरदिगार ने मेरे गुनाहों को बख़्श दिया और मुझे माफ़ कर दिया। अब अली[अ0] के दोस्तदारों को बशारत दे दो और यह कह दो कि मरते दम तक अली[अ0] से मुहब्बत करें। फिर फ़रज़न्दाने अली[अ0] को यके बाद दीगरे मुहब्बत करें।

इसके बाद सैय्यद हुमैरी ने कहा :

.....

यह कहकर उन्होंने आंखें बन्द कर लीं और दुनिया से रुख़ासत हो गए। उनके इन्तेक़ाल की ख़बर फैलते ही लोग उनकी तशीअ जनाज़ा के लिए उमड़ पड़े। (कशफुल ग़म्मा जिल्द 1, पेज 414)

शेख़ तूसी[अ0रह0] ने मुहम्मद बिन रशीद से नक़्ल किया है कि सै0 हुमैरी[रह0] ने अपनी वफ़ात से चन्द लमहे पहले यह अशआर कहे और उसका वाक़ेआ ये था कि उन पर बेहोशी तारी हो गई थी, उनका रंग सियाह पड़ गया था। इसके बाद वह होश में आए और उनका रंग सफ़ेद व नूरानी हो गया और वह अशआर यह हैं :

मैं अली[अ0] से मुहब्बत करता हूं क्योंकि उनके मुहिब्बों में से जो भी मरता है, वह ख़ुशख़बरी और ख़ुशी के साथ उसका इस्तेक़बाल करते हैं और मुस्कुराकर उससे रूबरू होते हैं और अगर वह मरे जो आपके दुश्मनों का दोस्तदार है, तो उसके लिए आतिशे जहन्नम के अलावा कोई रास्ता नहीं है। ऐ अबुल–हसन! या अली[अ0]! मेरी जान, मेरे रिश्तेदार, मेरी दौलत और रूए ज़मीन पर मैं जिस चीज़ का भी मालिक हूं, सब आप पर कुर्बान। ऐ अबुल–हसन! यक़ीनन मैं आपके फ़ज़ल और बुलन्द व बाला मक़ाम से वाक़िफ़ हूं। यहां तक कि मैं उसकी रस्सी को भी थामे हुए हूं जो आपसे मुहब्बत करता है। आप वसीये रसूल[स0] और आंहज़रत[स0] के इब्ने अम हैं। हम आपके दुश्मनों के दुश्मन हैं और उनसे क़तए तअल्लुक़ करने वाले हैं। आपके मुहिब कामयाब और मोमिन हैं कि उनकी हिदायत वाज़ेह है और आपके दुश्मन शहरए ज़लालत व गुमराही हैं और मुश्रिक हैं। एक बदज़बान ने अली[अ0] की मुहब्बत के सिलसिले में मेरी मलामत की, मैंने उसे जवाब दिया कि तुझ पर ख़ुदा की लानत हो। बेशक तू अहमक़ और बेअक़्ल है।

क़ाबिले ज़िक्र बात है कि यह सआदतमन्द आदमी सादात में नहीं थे, बल्कि 'सैय्यद' उनका लक़ब था।

9. अज़ाए इमाम हुसैन[अ0] में गिरया

वह चीज़ें जो इन ख़तरनाक लमहात में बहुत मुफ़ीद हैं, वह हज़रात सय्यदुश्शोहदा[अ0] के मसाएब पर गिरया व ज़ारी और बेताबी व बेक़रारी है। मुसम्मा बिन अब्दुल मलिक कुर्दीन बसरी कहते हैं कि इमाम जाफ़रे सादिक़[अ0] ने मुझसे फ़रमाया :

ऐ मुसम्मा! तुम इराक़ में

रहते हो। क्या तुम क़ब्रे हुसैन[अ0] की ज़ियारत को जाते हो?

मैंने अर्ज़ किया : नहीं! मैं बसरा में शनाख़्ता बन्दा हूं। वहां पर ऐसे लोग हैं जो ख़लीफ़ा के हवाख़्वाह हैं। हमारे दुश्मन नासिबी वग़ैरह क़बीलों में ज़्यादा हैं और चूंकि मुम्किन है कि हमारी जासूसी की जाए और नतीजा में वह लोग मुझको पकड़कर टुकड़े टुकड़े कर देंगे, लिहाज़ा मैं अमन व अमान महसूस नहीं करता हूं।

इमाम[अ0] ने फ़रमाया : क्या तुम वह मसाएब याद नहीं करते जो इमाम हुसैन[अ0] पर ढाए गए थे?

अज़ किया : हां!

फ़रमाया : क्या उस वक़्त गिरया व ज़ारी करते हो?

अर्ज़ किया : हां! ख़ुदा की क़सम! मैं याद करता हूं, गिरया करता हूं, इस तरह कि मेरे क़रीबी अफ़राद उसके असरात मेरे ऊपर देखते हैं और खाना नहीं खाता हूं। इस तरह कि उसके आसार भी मेरे चेहरा पर नुमायां हो जाते हैं।

इमाम[अ0] ने फ़रमाया : ख़ुदा की रहमत हो तुम्हारे आंसुओं पर! आगाह हो जाओ कि तुम उन लोगों में से हो जो हमारी ख़ुशी में ख़ुश और हमारे ग़म में ग़मगीन होते हैं, हमारे ख़ौफ़ से ख़ौफ़ज़दा होते हैं और हमारे अमन व अमान से अमनीयत का एहसास करते हैं।

आगाह हो जाओ कि तुम मौत के वक़्त देखोगे कि मेरे आबा व अजदाद तशरीफ़ लाए हैं और मलकुल मौत से निहायत सिफ़ारिश फ़रमा रहे हैं और वह जो ख़ुशख़बरियां देंगे वो बेहतर व बालातर होंगी और यक़ीनन मलकुल मौत तुम पर मेहरबान मां से ज़्यादा मेहरबान होगा। (कामिलुज़्ज़ियारात पेज 101)

10. मुख़्तसर की रहमते इलाही पर उम्मीद

सकराते मौत से निजात और उनको आसान बनाने वाले असबाब में से एक हालते एहतेज़ार में पड़े इन्सान का ख़ुदा की रहमत पर उम्मीद रखना और उससे लौ लगाना है।

एक बद्दू हालते एहतेज़ार में था। उससे कहा गया : तुम जांकनी के आलम में हो। उसने कहा : मुझे कहां ले जाएंगे? लोगों ने जवाब दिया : ख़ुदा की जानिब! उसने कहा : मुझे एक ऐसी ज़ात के पास ले जा रहे हैं कि जिससे मैंने ख़ैरो ख़्वाही के अलावा कुछ नहीं देखा है, मैं नाराहत नहीं हूं। (शरह नहजुल बलाग़ा जिल्द 8, पेज 291)

इस्फ़हान के एक आलमे दीन ने अपनी किताब में अपने एक तेहरानी दोस्त से नक़्ल किया है :

एक फ़ासिक़ व फ़ाजिर और अय्याश शायर अलहाज मुल्ला अली कनी[अ0रह0] का पड़ोसी था। (आयतुल्लाह मुल्ला अली कनी अज़ीमुश्शान मुज्तहिद और साहेबे जवाहरुल कलाम के शागिर्द थे) वह पड़ोसी बीमार हुआ और हालते जांकनी में पड़ गया। इस हालत में उसकी ज़बान बन्द हो गई, लेकिन अभी भी वह सुन और समझ सकता था। उसी वक़्त उसके इर्द–गिर्द मौजूद अफ़राद बात कर रहे थे कि कौन उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाएगा? अलमुख़्तसर लोगों ने कहा : आयतुल्लाह मुल्ला अली कुनी से दरख़्वास्त की जाए। देखें वह क़बूल करते हैं या नहीं? लोग उनकी ख़िदमत में गए और गुज़ारिश की कि उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ा दीजिए।

आयतुल्लाह मुल्ला अली कनी ने फ़रमाया : मैं उस फ़ाजिर व फ़ासिक़ की नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ाऊंगा। वह लोग आए और उन्होंने यह बात बता दी। उस आदमी ने जब हालते एहतेज़ार में यह बात सुनी, तो आंखें खोलीं और क़लमदान मांगा। लोगों ने क़लमदान दिया। इसके बाद एक काग़ज़ मांगा। जब लोग काग़ज़ लाए, तो उसने उस पर कुछ लिखा और क़लमदान में रख दिया औरर चन्द लमहे

नहीं गुज़रे थे कि वह दुनिया से रुख़सत हो गया। पसमान्दगान ने कहा :

देखें क्या लिखा है? काग़ज़ को खोला तो देखा कि लिखा है :

मैं इस बात से शर्मिन्दा हूं कि रोज़े जज़ा मैंने आपकी अफ़ू व बख़्शिश के लाएक़ कोई गुनाह नहीं किया। जब यह वाक़ेआ आयतुल्लाह मुल्ला अली कनी से बताया गया, तो उन्होंने फ़रमाया : मैं अभी आ रहा हूं और नमाज़े जनाज़ा पढ़ाऊंगा। ख़ुलासा यह है कि वह तशरीफ़ लाए और उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई।

क़ाबिले ज़िक्र है कि ऐसे हालात में मुख़्तसर के इर्द गिर्द मौजूद अतराफ़ उसे ख़ुदा की रहमत की याद दिलाएं और अल्ताफ़े इलाही की वुस्अ़त का तज़किरा करें ताकि माद्दी तअल्लुक़ात से क़तए राबिता करना और मौत के लिए तसल्ली होना उसके लिए आसान हो जाए।

दूसरी क़िस्म के आमाल

जांकनी की हालत के लिए मुफ़ीद आमाल की दूसरी क़िस्म वह आदाब व अफ़आ़ल हैं कि जिन्हें सरहाने मौजूद दूसरे अफ़राद अंजाम देते हैं और उन आमाल से जांकनी की मुश्किल इस पर आसान हो जाएगी।

1. सूरह साफ़ात की तिलावत

मुहतज़िर के पास इस सूरए साफ़्फ़ात की तिलावत करना जांकनी की सख़्ती को उस पर आसान कर देगी। जैसा कि अबू सुलैमान जाफ़री से मन्कूल है कि वह कहते हैं :

मैंने अपनी आंखों से देखा कि हज़रत मूसा काज़िम[अ0] ने अपने फ़रज़न्द क़ासिम से फ़रमाया : 'बेटा! उठो और अपने भाई के पास सूरह साफ़्फ़ात की आख़िर तक तिलावत करो।' उन्होंने इस हुक्म के मुताबिक़ सूरए साफ़्फ़ात की तिलावत कर दी और जब आख़िरी आयत तक पहुंचे, तो वह जवान दुनिया से रुख़्सत हो गया। जब उसके चेहरे पर कपड़ा डाल दिया गया और मौजूद अफ़राद बाहर चले गए, तो याकूब इब्ने जाफ़र ने इमाम[अ0] की तरफ़ रुख़ किया और अर्ज़ किया : 'हमेशा यह रस्म व सुन्नत रही है कि मौत के वक़्त सूरए यासीन की तिलावत करते थे। लेकिन आपने हमें सूरए साफ़्फ़ात की तिलावत का हुक्म दिया?' हज़रत ने फ़रमाया : बेटा! मौत की वजह से रंज व ग़म में मुब्तेला किसी भी आदमी के पास सूरए साफ़्फ़ात की तिलावत नहीं की जाएगी, मगर यह कि ख़ुदा वन्दे आलम उसके लिए राहत व सुकून में जल्दी फ़रमाएगा। (काफ़ी, जिल्द 3, पेज 122)

2. मुहतज़िर को उसके मुसल्ले पर ले जाना

मोहतज़िर के राहत व सुकून और हालते एहतेज़ार की आसानी के असबाब में से एक उसे उस जगह ले जाना है जो उसकी इबादत और नमाज़ व मुनाजात की जगह है।

हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन[अ0] ने फ़रमाया है : अबू सईद ख़ुदरजी रसूलुल्लाह के सहाबी और अम्रे विलायत में सीध ो आदमी थे। वो जांकनी की हालत में पड़ गए। तीन दिन तक उसी हालत में रहे। उनके घर वालों ने उनकी तहारत का इन्तेज़ाम करके उन्हें उनकी नमाज़ अदा करने की जगह पर मुन्तक़िल कर दिया। इस वाक़ेआ के बाद वह दारे फ़ानी से रुख़्सत हो गए। (काफ़ी, जि 3, पे 125)

इमाम जाफ़रे सादिक़[अ0] फ़रमाते हैं :

ख़ुदा वन्दे आलम ने अबू सईद ख़ुदरजी को यह अक़ीदए इमामत अता फ़रमाया था और जब वह जांकनी की सख़्ती हालत में पड़ गए और उन्होंने कहा : 'मुझे मेरी नमाज़ पढ़ने की जगह पर ले चलो।' लोग भी उन्हें उनकी नमाज़ अदा करने की जगह पर ले गए और ज़्यादा देर न गुज़री थी कि वह दारे दुनिया से रुख़्सत हो गए। (काफ़ी, जिल्द 3, पेज 126)

3. साहेबाने ईमान की मौजूदगी और उनका दुआ करना

हालते एहतेज़ार की सहूलत व आसानी के लिए और जांकनी की दुश्वारियों और ख़तरात को दूर करने के लिए मोमिनीन की दुआ बहुत मोअस्सिर साबित होती है और यह बात दुआ की उमूमियत यानी अपने बरादरे दीनी की दुआ की फ़ज़ीलत की दलीलों से मुकम्मल तौर पर साबित होती है। बल्कि बाज़ रवायात से यहां तक साबित है कि मलकुल मौत से इल्तेमास व दरख़ास्त करना भी इस हालत की सख़्तियों को दूर करने में मोअस्सिर साबित होता है।

इमाम जाफ़रे सादिक़[अ०] से मन्कूल है कि जनाबे सलमाने फ़ारसी[रह०] कूफ़ा में एक लोहार के पास से गुज़रे। देखा कि एक जवान मदहोशी की हालत में गिरा पड़ा है और लोग उसके चारों तरफ़ भीड़ लगाए हुए हैं। उन लोगों ने सलमान[रह०] से अर्ज़ किया : यह जवान मिर्गी में मुब्तेला है। क्या अच्छा होता अगर आप उसके कान में कोई ज़िक्र पढ़ देते? सलमान[रह०] उसके पास गए। जैसे ही जवान की आंख उन पर पड़ी, वह होश में आ गया और अर्ज़ किया :

या अबा अब्दिल्लाह! जैसा कि लोग कह रहे हैं, मुझमें कोई बीमारी नहीं है, बल्कि इस हालत की पैदाइश का सबब यह है कि मेरा गुज़र इस लोहार के पास से हुआ। वह हथौड़ी लोहे पर मार रहा है। यह मन्ज़र देखकर मुझे परवरदिगार का यह इरशाद याद आ गया : 'मलाएका अज़ाब के पास लोहे के गुर्ज़ होंगे।' अज़ाबे इलाही के ख़ौफ़ से मैं बेहोश हो गया।

जनाबे सलमान ने उस जवान को अपना दोस्त बना लिया और राहे ख़ुदा में उससे मुहब्बत उनके दिल में उतर गई। यही वह है कि वह हमेशा उसके साथ रहे थे। यहां तक कि वह जवान बीमार हो गया। सलमान उसके सरहाने हाज़िर हुए। वह जवान जांकनी की हालत में था।

उस वक़्त जनाबे सलमान ने कहा : ऐ मौत के फ़रिश्ते! मेरे भाई के साथ नर्मी व मेहरबानी से काम लो। मलकुल मौत ने जवाब में कहा : या अबा अब्दिल्लाह! मैं हर मोमिन के साथ नर्मी व मेहरबानी से पेश आता हूं। (अमाली शेख़ मुफ़ीद, मजलिस 16, पेज 136)

4. मोहतज़िर को तलक़ीन करना

मोहतज़िर को तलक़ीन करना यानी तौहीद, रिसालत और इमामत की गवाही को उसकी ज़बान से जारी कराना, या कम से कम अक़ाएद को उसे याद दिलाना कि बेशक यह अमल उसकी आसानी और राहत व सुकून में असर अन्दाज़ साबित होगा। उसके अलावा ईमान के ज़ाएल होने का एहतेमाल मुन्तफ़ी या कम हो जाएगा।

अबूबक्र हज़रमी का एक रिश्तेदार बीमार हो गया। हज़रमी जांकनी की हालत में उसके पास हाज़िर हुए। रिश्तेदार को तौहीद और रिसालत व इमामत की तलक़ीन की। उसके इन्तेक़ाल के बाद उसकी बीवी ने उसे ज़िन्दा और सालिम ख़्वाब में देखा, तो उससे कहा : क्या तुम मेरे नहीं हो? कहा : हां! मैं मरा था, लेकिन अबूबक्र हज़रमी ने मुझे जिन कलमात की तलक़ीन की थी, उनकी बरकत से मैं निजात पा गया। अगर ऐसा न होता तो मेरी हलाकत नज़दीक थी। (अलकुना वल अलक़ाब जिल्द 1, पेज 19)

अकरमा इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] के ज़माने में ज़िन्दगी बसर करता था और उसका अक़ीदा ख़ेराज का अक़ीदा था। अबू बसीर कहते हैं : मैं और चन्द दूसरे अफ़राद इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] की ख़िदमत में हाज़िर थे। उसी दौरान किसी ने अर्ज़ किया कि असकरिया हालते एहतेज़ार में है। हज़रत[अ०]

ने फ़रमाया : 'मुझे फर्सत दो, मैं वापस आता हूं।' हमने अर्ज़ किया : 'हां!' हज़रत तशरीफ़ ले गए और ज़्यादा देर न गुज़री थी कि वापस तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : 'अगर अकरमा से उसकी रूह बदन से क़ब्ज़ होने से पहले मुलाक़ात करता, तो उसे ऐसे कलमात सिखाता जो उसे फ़ायदा पहुंचाते। लेकिन मैं उस वक़्त उसके पास पहुंचा जब उसकी रूह बदन से निकल गई थी।' मैंने अर्ज़ किया : 'मैं आप पर कुर्बान! वह कलमात क्या हैं?' फ़रमाया : 'ख़ुदा की क़सम! वह कलामे वही है जिसका तुम अक़ीदा रखते हो। बस अपने मर्दों को मौत के वक़्त शहादत ला–इलाहा इल्लल्लाह और शहादते रिसालत व विलायत की तलक़ीन करो।' (वसाएलुश्शीया जिल्द 2, पेज 37)

कई रवायतों में वारिद हुआ है कि मोहतज़िर को कलमाते फ़रज की तलक़ीन करो और वह कलमाते शरीफ़ा ये हैं :

.....

इमाम जाफ़रे सादिक़अ0 फ़रमाते हैं कि हज़रत अमीरुल मोमिनीनअ0 के ख़ानदान में से जब भी कोई शख़्स जांकनी की हालत में होता, तो उससे फ़रमाते थे :

और जब मरज़ुल मौत में गिरफ़्तार आदमी उन कलमात को ज़बान पर जारी कर लेता, तो फ़रमाते थे : अब जाओ कि तुम पर कोई ख़ौफ़ नहीं है। (वसाएलुश्शीया जिल्द 2, पेज 38, हे 3)

5. मोहतज़िर के पैरों को क़िब्ला रुख़ करना वाजिब

अमीरुल मोमिनीनअ0 फ़रमाते हैं कि आले अब्दुल मुत्तलिब में से एक शख़्स हालते एहतेज़ार में था। रसूलुल्लाह उसके पास तशरीफ़ लाए, तो आपने देखा कि उसे क़िब्ला से हटाकर दूसरी सिम्त लिटा रखा है।

आपने फ़रमाया : इसे क़िब्ले की तरफ़ बिठा दो कि अगर ऐसा करोगे तो फ़रिश्ते उसके पास आएंगे। ख़ुदा उस पर नज़रे इनायत फ़रमाएगा और वह दुनिया से जाने तक उस हालत में रहे। (वसाएलुश्शीया जिल्द 2, पेज 35, हे 6)

●●●

जामिअतुज़्ज़हरा तनज़ीमुल मकातिब में दाख़िला टेस्ट

इन्शाअल्लाह जामिअतुज़्ज़हरा तनज़ीमुल मकातिब का दाख़िला टेस्ट 25 अप्रैल, 2019 को तनज़ीमुल मकातिब, रेड गेट बिल्डिंग, गोलागंज, लखनऊ में 08:30 बजे सुबह होगा।

जो हज़रात अपनी बच्चियों को दीनी तालीम दिलाने के ख़्वाहिशमन्द हैं वह दाख़िला की दरख़ास्त के हमराह तालीमी सर्टीफिकेट की फोटो कॉपी जल्द से जल्द रवाना करें। दरख़ास्त वसूल होने की आख़िरी तारीख़ 20 अप्रैल, 2019 है।

दाख़िले की शर्तें :

1. तनज़ीमुल मकातिब के किसी मकतब से पंजुम अव्वल दर्जे कामयाब या उसके बराबर तालीम हासिल की हो।
2. उम्र 14 साल से ज़्यादा न हो। (जो बच्चियां हाईस्कूल पास होंगी उनकी उम्र में दो साल की छूट दी जाएगी।)
3. स्कूल की तालीम में कम से कम 8वीं पास हो।
4. दाख़िला मेरिट लिस्ट के मुताबिक़ होगा।

नोट– गुज़ारिश है कि इण्टरमीडिएट या उससे ज़्यादा दरजात की तालीम हासिल कर चुकी बच्चियां दरख़ास्त न दें।

(सिकरेट्री)

ख़ुदसाज़ी

सहीफ़ए सज्जादिया की रौशनी में

हुज्जतुल इस्लाम अहमद तुराबी **तर्जुमा : मौलवी मुहम्मद रज़ा 'मुबल्लिग़'**

सहीफ़ए सज्जादिया मआरिफ़ व एख़्लाक़ और फ़ज़ाएले इन्सानी का एक अज़ीम ख़ज़ाना है कि जिसमें दुआ, मकारिमुल एख़्लाक़ के अलावा बहुत सी ऐसी दुआएं मौजूद हैं कि जो मआरिफ़ और एख़्लाक़े इन्सानी से मरबूत हैं जिनके ज़रिया इन्सान अपने आपको ज़ेवरे एख़्लाक़ से आरास्ता व पैरास्ता कर सकता है।

जो इन्सानी सिफ़ात दुआए मकारिमुल एख़्लाक़ में ज़िक्र किए गए हैं उनमें से बाज़ मुन्दरजा ज़ैल हैं :

1. ईमान
2. सिफ़ात हमीदा को अपनाना
3. इज़्ज़त बग़ैर किब्र व गुरूर के
4. बग़ैर ख़ुदपसन्दी के इबादत करना
5. बग़ैर एहसान जताए सख़ावत करना
6. बुज़ुर्गी तवाज़ो के हमराह
7. इज्तेमाई नेक सिफ़ात
8. ज़ुल्म का मुक़ाबला
9. अदालत क़ायम करना
10. सिफ़ाते मुत्तक़ीन
11. ईमानदारों से राबिता पैदा करना
12. ख़र्च में म्यानारवी
13. तलबे इज़्ज़त
14. हर हाल में हुस्ने अमल.....

बहरहाल अगर हम सहीफ़ए सज्जादिया का मुतालेआ करें और इमामे सज्जाद[अ0] की किसी भी दुआ का मुतालेआ करें तो हम देखेंगे कि हर दुआ में एख़्लाक़ हसना और फ़ज़ाएले इन्सानी के ख़ज़ाने पाए जाते हैं। बस हमें मारेफ़त के साथ उन दुआओं का मुतालेआ करना होगा और अपने आपको कमाले हक़ीक़ी तक ले जाना होगा। उनमें से हम आपके सामने बाज़ दुआओं के फ़िक़रात को बतौर नमूना पेश करते हैं :

1. ख़ुदसाज़ी और इस्लाहे तलबी

इन्सानी कमाल और एख़्लाक़ी करामात तक पहुंचने की पहली शर्त इस्लाहे तलबी और ख़ुदसाज़ी है यानी पहले ख़ुदसाज़ी फिर दीगरान साज़ी और इमाम[अ0] ने इस रूहानी आमिल की तरफ़ इस तरह इशारा किया है :

.....

ख़ुदा वन्दा! मुहम्मद व आले मुहम्मद पर दुरूद व सलाम भेज और मुझको नेक अफ़राद के ज़ेवर और ज़ीनत तक़वा से मुत्तक़ियों की तरह मज़ीन फ़रमा : यानी अदालत को क़ायम करने, गुस्सा को पी जाने, आतिशे अदावत को बुझाने, आपसी इख़्तेलाफ़ात को दूर करके आपस में सुलह व आशती पैदा करने, नेकियों को रवाज देने और बुराइयों की पर्दापोशी करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

.....

और तू मुझको मज़बूती के साथ काम करने वाला और राहे कमाल व हिदायत का

रहनुमा और अपने नेक और सालेह बन्दों में क़रार दे।

ख़ुदावन्दा! कुरआन के वसीले से हमारे ज़ाहिर की इस्लाह फ़रमा और कुरआन ही के ज़रिया हमको आदाते मज़मूमा और बुरे एख़्लाक़ से दूर फ़रमा।

2. नेक नीयती

माबूद! मेरी नीयत को बेहतरीन नीयतों की तरफ़ हिदायत फ़रमा और हमारी नीयतों को अपने लुत्फ़ो करम से पुर समर क़रार दे।

3. इज़्ज़त व शराफ़त

बारे इलाहा! मेरी इज़्ज़त को माल व दौलत के ज़रिया महफ़ूज़ कर ले और तंगदस्ती की वजह से मेरे मक़ाम को पस्त न करना।

इमामे सज्जाद[अ0] दुआ में ख़ुदा वन्दे आलम से तलब करते हैं कि दूसरों के वसाएल से बेनियाज़ी और तदबीर ज़िन्दगी में तंगदस्ती न होने की वजह से आबरू व इज़्ज़त को समाज व मुआशिरे में महफ़ूज़ रखे और दूसरी दुआ में इस बात की तरफ़ याददहानी कराई है कि इज़्ज़त व शराफ़त का मेयार दूसरों के बारे में दौलत व सरवत को क़रार नहीं देना चाहिए और न ही फ़क़ीरों को नादारी की वजह से हक़ीर व ज़लील समझना चाहिए।

ख़ुदा वन्दा! तू मेरी मदद फ़रमा ताकि मैं फ़क़ीरों को उनकी फ़क़ीरी की वजह से पस्त और हक़ीर न शुमार करूं और न ही मालदारों को उनके माल व दौलत की वजह से मालदार जानूं, इसलिए कि हक़ीक़ी मानों में शरीफ़ और इज़्ज़तदार वही है जो तेरी इताअत के ज़ेरे साया दरजा शराफ़त तक पहुंचा हो और हक़ीक़ी इज़्ज़तदार वही है जो तेरी बन्दगी की वजह से इज़्ज़तदार हुआ हो। बस ऐ अल्लाह मुहम्मद व आले मुहम्मद पर दुरूद व सलवात भेज और मुझको न ख़त्म होने वाली इज़्ज़त व बुज़ुर्गी अता फ़रमा।

4. तवाज़ो दरावुज इज़्ज़त

बारे इलाहा! मुझे इज़्ज़त व बुज़ुर्गी अता कर लेकिन मुझे गुरूर व ख़ुदपसन्दी में मुब्तेला न करना। मुझे लोगों के दरमियान एक दर्जा भी बुलन्द न करना मगर ये कि मुझे मेरे नफ़्स के नज़दीक इतना ही पस्त व हक़ीर बना दे और मुझे ज़ाहिरी इज़्ज़त अता करने से पहले मुझे मेरे नज़दीक बातिनी ज़िल्लत उसी मिक़्दार में अता फ़रमा।

5. इज्तेमाई मुहब्बत व मवद्दत

परवरदिगार! मोमिनों की बनिस्बत मेरे सीने में जो कीना पाया जाता है उसको मेरे सीने से दूर कर दे।

बारे इलाहा! मोमिनों के सीनों में हमारी मवद्दत व मुहब्बत को क़रार दे और हमारी ज़िन्दगी को तल्ख़ न होने देना।

जहां पर इमाम सज्जाद[अ0] ने इज्तेमाई मुहब्बत से मुताल्लिक़ और मोमिनों से दोस्ती करने से मुताल्लिक़ दुआ फ़रमाई है वहीं दोस्ती का क्या मतलब है को भी बयान किया है और मुअय्यन फ़रमाया है :

माबूद! तू हमें इतनी तौफ़ीक़ अता फ़रमा कि जो लोग हमसे कट गए हैं उनसे रिश्तए मुहब्बत को फिर से जोड़ सकें और जिन्होंने हम पर ज़ुल्म किया है उनके साथ इन्साफ़ से पेश आ सकें और जिन्होंने हमसे दुश्मनी की है उनसे सुल्ह कर लें सिवाए उन दुश्मनों के जो तेरे लिए और तेरी वजह से दुश्मनी की है ऐसे दुश्मन से हम मुहब्बत नहीं कर सकते और न ही दोस्ती कर सकते हैं और न ही ऐसे गिरोह से हम इन्साफ़ के साथ पेश आ सकते हैं।

6. इज्तेमाई हुक़ूक़ की रिआयत

ख़ुदा वन्दा! मैं तेरी पनाह चाहता हूं इस बात से कि इस हक़ का मुतालबा करूं जिसका हक़दार मैं नहीं हूं और किसी के साथ धोखाबाज़ी करने से भी तेरी पनाह चाहता हूं।

7. महरूम अफ़राद की

हिमायत

परवरदिगारा! मुझे उसी रोज़ और उसी रात और ज़िन्दगी के तमाम हालात में ये तौफ़ीक़ अता फ़रमा कि मैं कमज़ोरों की हिमायत कर सकूं और सितम रसीदा अफ़राद की फ़रियादरसी कर सकूं और दूसरों को तकलीफ़ पहुंचाने से परहेज़ कर सकूं।

बारे इलाहा! मुझे हर मोमिन और मुस्लिम मर्द व औरत को तकलीफ़ पहुंचाने से बाज़ रख।

8. ज़बान व गुफ़्तार की आफ़ात से परहेज़

मेरे माबूद! जिन चीज़ों को शैतान मेरी ज़बान पर जारी करता है मसलन बेहूदा और नसज़ा कलमात और वो बदज़बानी जो दूसरों की बेइज़्ज़ती का सबब बनती है और बातिल गवाही, मोमिन की ग़ीबत उसकी ग़ीबत में और उसकी बुराई उसके सामने, ख़ुदाया इन तमाम आफ़ात ज़बान व गुफ़्तार से मुझे दूर करके उन लगू बातों को अपनी हम्द व सना में तब्दील फ़रमा।

9. निफ़ाक़ और दो रुख़ी से परहेज़

ख़ुदा वन्दा! हमें कुरआन के वसीले से निफ़ाक़ और असबाबे निफ़ाक़ से महफ़ूज़ फ़रमा।

इमाम सज्जाद[अ0] ने एक दूसरी इबारत में निफ़ाक़ का इस तरह मानी बयान फ़रमाया है :

कितने ऐसे धोखेबाज़ हैं जिन्होंने अपने धोखे के ज़रिया मुझ पर ज़ुल्म व सितम किया है और अपने शिकार करने वाली जाल को मेरे पैरों में डालकर मुनासिब वक़्त का इन्तेज़ार कर रहे हैं दर हालांकि मुझसे खुशरोई से मिलते हैं जब कि उनकी दिल की गहराइयों में मेरे लिए नफ़रत भरी हुई है।

10. ख़्वाहिशाते नफ़्स से जिहाद

खुदा वन्दा! मैं ख़्वाहिशाते नफ़्सानी की पैरवी से तेरी पनाह चाहता हूं और राहे हिदायत की मुख़ालिफ़त करने से भी तेरी पनाह का तलबगार हूं।

परवरदिगारा! मुझे और मेरी ज़ुर्रियत को शैतान मर्दूद के मक्र व फ़रेब से निजात दे इसलिए कि जब मैं किसी बुराई का इदारा करता हूं तो ये मेरी हौसला अफ़ज़ाई करता है ताकि मैं इस बुराई का इर्तेकाब कर लूं और जब किसी अच्छाई का इदारा करता हूं तो मुझे अच्छाई से रोक देता है और उसके बाद मेरे सामने ख़्वाहिशाते नफ़्सानिया को पेश करता है और हक़्क़ानियत दीन और अम्बिया की बशरीयत और अन्दाज़ से मुताल्लिक़ मुझे मुश्तबा कर देता है।

इमाम सज्जाद[अ0] ने अपनी बातों को जारी रखते हुए शैतान से मुक़ाबला करने और उसके मक्र व फ़रेब से महफ़ूज़ रखने वाली चीज़ की तरफ़ इशारा किया है :

ख़ुदा वन्दा! अपनी कुदरत व ताक़त से शैतान के क़ब्ज़े को हमसे दूर फ़रमा और शैतान की ताक़त को अपनी ताक़त से मग़लूब फ़रमा ताकि हम तेरी बारगाह में दुआ करके शैतान के क़ब्ज़े और उसकी फ़रेबी जाल से रिहाई हासिल कर सकें और गुनाहों से महफ़ूज़ अफ़राद के गिरोह में शामिल हो सकें। ●●●

पेज 10 का बक़िया...

मानकर तुमने इस्लाम छोड़ा। जब मेरे जैसे अली[अ0] तुम्हारे सरदार बन गए, तो क़दम मैदान से नहीं हटे। नबीये अकरम[स0] ने तीन दिन की शिकस्त क़बूल की, चौथे दिन अली[अ0] को भेजा कि ''देखो! मेरी ज़िन्दगी में इस्लाम में भगदड़ हो जाती है, अगर सरदार तुम्हारे बनाए हुए होते हैं और भगौड़ा और बिगड़ा इस्लाम बहादुर बन जाता है, अगर अली[अ0] को सरदार मान लेते हो।'' नबीये करीम[स0] ने तजुर्बा करा दिया कि मेरे बाद अपनी मर्ज़ी से सरदार बनाओगे तो इस्लाम मुन्तशिर हो जाएगा, मेरे अली[अ0] को सरदार बनाओगे तो इस्लाम कामयाब रहेगा।

जारी.....

बुशरे हाफ़ी

मौलाना सै0 असद अली (मुम्बई)

तबलीग़ का भी एक उसूल है। अच्छी बातों के ज़रिया समझाना और लाठी मारकर समझाना, दोनों में काफी फ़र्क़ है। मगर ये पहचानना ज़रूरी है कि कहां मौअज़ा हसना से काम लेना है और कहां लाठी मारकर समझाना है? इसको समझने के लिए अक़्लमन्दी होना ज़रूरी है। एक बाप अपने बेटे को सिर्फ़ डांट डपट कर समझाएगा, तो वो लड़का एक दिन मुक़ाबला पर आ सकता है। एक भाई अपने भाई को डांटकर समझाएगा, तो वहां भी अच्छाई नहीं पैदा होगी। अगर शौहर मुसलसल बीवी को डांटता रहे, तो एक दिन तलाक़ की नौबत आ जाती है। अगर कोई हाकिम महकूम को डांटता है, तो एक दिन वो अपने को महकूमियत से ख़ारिज करने का ऐलान कर देगा या पीठ पीछे शिकवा व शिकायत करने लगेगा। बहरहाल हर जगह नुक़सान का पहलू ज़्यादा अयां है।

एक जगह का वाक़ेआ है कि एक मौलवी ने शादियों में गाना–बाजा करने से मुसलसल रोका और मजलिस में भी मना करता रहा, फिर भी लोग न माने, तो लाठी लेकर ढोल वालों के पीछे दौड़ लगाई और ढोल को फोड़ दिया। उनके उस्ताद को मालूम हुआ, तो उन्होंने फ़रमाया कि जब क़ौम न माने, तो असाए मूसा की एक दिन ज़रूरत पड़ ही जाती है।

मासूमीन[अ0] ने भी तबलीग़ की है, बल्कि तबलीग़ करने में बतरीक़े अहसन नर्म लहजा और ज़बान का सहारा है।

इस सिलसिले में वाक़ेआत बहुत हैं, मगर यहां तक सिर्फ़ एक शख़्सियत पेश करना मक़सद है और वो हैं इमाम मूसा काज़िम[अ0], जिन्होंने एक जुम्ला कहकर बदअमल को हुस्ने अमल का आदी बना दिया, जिसका तज़किरा आज भी किताबों में महफ़ूज़ है।

एक वाक़ेआ का ज़िक्र है कि इमाम[अ0] कहीं जा रहे थे। देखा कि एक घर से एक कनीज़ कूड़ा करकट फेंक कर घर वापस जा रही है। आपने उसको रोक कर पूछा :

उस घर से जो गाना बजाने की आवाज़ आ रही है, ये शख़्स गुलाम है या आज़ाद? उस कनीज़ ने जवाब दिया :

वो आक़ा है, गुलाम नहीं है। इमाम[अ0] ने फ़रमाया : हां! आक़ा ही है, अगर गुलाम होता, तो अपने आक़ा की नाफ़रमानी न करता।

इस सवाल व जवाब में उसको ताख़ीर हुई और घर में ताख़ीर से आने का सबब उसके आक़ा ने मालूम किया, तो कनीज़ ने कहा :

बाहर एक शख़्स पूछ रहा था कि ये घर आक़ा का है या गुलाम का, मैंने कहा कि आक़ा का है, उसने कहा कि हां! इसी लिए हक़ीक़ी आक़ा की नाफ़रमानी हो रही है। कनीज़ इमाम को नहीं पहचानती थी। घर का मालिक घर से नंगे पावं निकला और कनीज़ से पूछा :

किधर गए हैं?

वो नंगे पांव दौड़ता हुआ इमाम अ.स. के पास पहुंचा और सच्चे दिल से तौबा की।

वो जब तक ज़िन्दा रहे,

हमेशा नंगे पांव चलते थे, इसी लिए उनका लक़ब 'हाफ़ी' पड़ गया। और जब वो बीमार हुए, तो उनके लड़कों ने क़ारुरह ले जाकर नसरानी हकीम को दिखलाया। नसरानी हकीम ने कहा :

ये किसी वलिये ख़ुदा या किसी फ़रश्ते का क़ारुरह मालूम होता है? लड़कों ने कहाः कोई वली या फ़रिश्ता नहीं हैं ये बात आप क्यों कह रहे हैं? नसरानी हकीम ने कहा :

इनके जिगर के टुकड़े ख़ौफ़े ख़ुदा से निकलकर क़ारुरह में आ गए हैं। जब लड़कों ने बताया हमारे बाप हैं, तो उस नसरानी हकीम ने कलमा पढ़ लिया और वो मुसलमान हो गया। जब लड़के पलट कर आए, तो 'हाफ़ी' ने पूछा :

क्या नसरानी हकीम ने कलमा पढ़ लिया?।

ऐसे होते हैं तबलीग़ करने वाले कि तलवार चलाते हैं, न नैज़ा, क़ारुरह देखकर नसरानी हकीम कलमा पढ़ लेता है और तलवार से मुसलमान बनाने की ज़रुरत नहीं होती।

ज़ोहद व तक़वा और रियाज़त में अपना सानी नहीं रखते थे। बशरे हाफी को तमाम अइम्मए हदीस ने सक़्क़ा क़रार दिया है। उनका इन्तेक़ाल हुआ तो तमाम मुहद्दिसीन को रंज व ग़म हुआ।

बशर हाफी कहते हैं उन्होंने ख़्वाब में रसूले ख़ुदा स.अ. की ज़्यारत की। आपने फरमाया :

बशर! तू जानता है कि तुझे अपने हमअसरों में क्यों बुलन्दी मिली?। बशर हाफी ने कहाः या रसूल अल्लाह! मैं नहीं जानता। तो हुज़ूर ने फरमायाः

मेरी सुन्नत की इत्तेबा, सालेहीन की ख़िदमत, बरादराने इस्लाम को नसीहत करने और मेरे अहलेबैत स. की मुहब्बत के सबब परवरदिगारे आलम ने तुझे पाक लोगों के मरतबे में पहुंचा दिया।

●●●

जामिया इमामिया तनज़ीमुल मकातिब में दाख़िला टेस्ट

अपने बच्चों को हिन्दी, अंग्रेज़ी, हिसाब, कम्प्यूटर और हिफ़्ज़े कुर्आन के साथ आला दीनी तालीम दिलाने के ख़्वाहिशमन्द हज़रात हसबे ज़ेल शराएत पूरे होने की सूरत में दरख़ास्त रवाना करें ताकि दाख़िला के इम्तेहान और इन्टरव्यू में उन्हें शरीक किया जा सके।

दाख़िले की शर्तें :

1. उम्र 14 साल से ज़्यादा न हो।
2. तनज़ीमुल मकातिब के किसी मकतब से पंजुम अव्वल दर्जे कामयाब या उसके बराबर तालीम हासिल की हो।
3. इण्टरव्यू में कामयाबी।

नोट– 1. दाख़िला मेरिट की बुनियाद पर होगा।

2. हाईस्कूल पास उम्मीदवार को उम्र और दूसरे शर्तों में छूट दी जाएगी।
3. क्लास पंजुम में मसरूफ तलबा भी इण्टरव्यू में शरीक हो सकते हैं।

तारीख़ : 28 अप्रैल, 2019, बरोज़ इतवार, 8 बजे सुबह

(सिकरेट्री)

नमाज़ इमाम हुसैन[अ0] का एक अहम पैग़ाम

मौलाना जौन रज़ा आज़मी

मुक़द्दस दीने इस्लाम में नमाज़ को तमाम आमाल व इबादात में सरे फ़ेहरिस्त क़रार दिया है, चुनानचे ख़ुदा वन्द आलम ने मुत्तक़ीन के औसाफ़ में बेहतरीन बन्दों के सिलसिले में फ़रमाता है:

अल्लज़ीना युमिनूना बिलग़ैब व यक़ीमूनस्सलाता

(सूरह बकरा, आयत 3)

(परहेज़गार) वही लोग हैं कि जो ग़ैब (वो चीज़ें जो हिस से पोशीदा और पिन्हां हैं) पर ईमान लाते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं।

ये इबादत इस क़दर अहमियत की हामिल है कि न ही फ़क़त दीने इस्लाम में बल्कि अदयाने साबिक़ और गुज़िश्ता अंबिया के शराएत में भी तमाम इबादात व आमाल के ऊपर क़रार दिया हुआ था लिहाज़ा जनाबे इब्राहीम अ. ख़ुदा वन्दे आलम से अपने और अपनी ज़ुर्रियत के लिए नमाज़ क़ायम करने की तौफ़ीक की दरख़्वास्त करते हुए कहते हैं:

रब्बिज अलनि मुक़ीमस्सलाता वमिन ज़ुर्रियते।

(सूरह इब्राहीम, आयत 40)

हज़रते लुक़मान अ. हक़ीम भी अपने फ़रज़न्द को नमाज़ क़ायम करने की वसीयत करते हैं:

या बुनैया अक़िमिस्सलाता

(सूरह लुक़मान, आयत 17)

हज़रत ईसा अ. भी इसी नमाज़ को अपने अव्वलीन वज़ाएफ़ में शुमार करते हुए कहते हैं:

वऔसानी बिस्सलाती वज़्ज़काते मादुमतो हैयन

(सूरह मरयम, आयत 31)

जब तक मैं ज़िन्दा हूं मुझे नमाज़ और ज़कात की सिफ़ारिश व वसीयत की गयी है।

बस नमाज़ की अहमियत के लिए यही काफी है कि तमाम आमाल व इबादात की क़बूलियत व अदम के मेयार उसी नमाज़ को क़रार दिया गया है:

फ़इन क़ोबेलत मासिवाहा वइन रुद्दत रुद्दा मा सिवाहा

(बेहारुल अनवार, जिल्द 83, सफ़हा 35)

इसी बुनियाद पर ही इमाम हुसैन अ.स. अपने पैग़ाम और नारे के साथ और आप के असहाब ने भी नमाज़ की अहमियत की तरफ़ मुतवज्जह किया है आपके असहाब, अंसार व अहबाब ने इन एहसास तरीन लम्हात में भी नमाज़ अदा की चाहे नमाज़ ख़ौफ़ की सूरत में कस्र नमाज़ ही पढ़कर यहां तक कि सिर्फ़ एक ही नमाज़ क़ायम करने के बाद अपनी जान इमाम अ. के साथ में अपनी आख़री नमाज़ अदा कर सकें, बल्कि पूरी रात इबादत के लिए एक ही रात की मोहलत हासिल कर ली जाती है, जैसा कि रवायात में वारिद हुआ है।

फ़होवा यालमो अन्नि क़द कुन्तो उहिब्बुस्सलाता लहु वतिलावता किताबेह वकसरतद दुआआ वलइस्तग़फ़ाराह।

(इर्शाद मुफ़ीद, पे. 230 व तारीख़े तबरी, जिल्द 6, सफ़हा 238 व तारीख़ें कामिल इब्ने असीर, जिल्द 3, पे. 285)

पस ख़ुदा ही जानता है कि बेशक मैं नमाज़, अल्लाह की किताब की तिलावत, दुआ की कसरत और इस्तेग़फ़ार

करने से मुहब्बत करता हूं।

इमाम के ये जुम्ले जो दो पैग़ाम और मुस्तक़िल ऐलान पर मुश्तमिल बयान नमाज़ की अहमियत को उजागर करता है, नवीं मुहर्रम की अस्र के वक़्त दुश्मन ने इमाम के ख़ैमे की तरफ़ चढ़ाई कर दी तो आंहज़रत ने अपने भाई जनाब अबुल फ़ज़लिल अब्बास को क़रीब बुलाते हुए फ़रमायाः क्योंकि पहले ही मरहले में इमाम ने हुक़्म दिया कि दुश्मन के पास जायें और उनसे चढ़ाई की वजह दरयाफ्त करें तो उन अश्क़िया का जवाब यही था कि नया और ताकीदी हुक्म इब्ने ज़्याद की तरफ़ से आया है कि अभी इसी वक्त जंग करें या फ़िर यज़ीद की बैअत करें।

जब हज़रत अबुल फज़लिल अब्बास ने दुश्मन के पैग़ाम को इमाम अ. की ख़िदमत में पहुंचाया तो दूसरे मरहले में इमाम अ. हुक्म फ़रमाया कि जी हां! यही मुक़र्रर हुआ था कि नवीं मुहर्रम को अस्र के वक़्त जंग शुरू करें लेकिन इमाम अ. नमाज़ और क़राते क़ुरआन के ऐहतमाम के लिये शक़ी दुश्मन से एक रात की मोहलत की दरख़्वास्त फ़रमाई।

ज़ कर्रततस्सलाता जअलकल्लाहो मिनलमुसल्ली नज़्ज़ाकरीन।

(मक़तल मुकर्रम, सफ़ा 244, तारीख़े तबरी, जिल्द 6, सफ़ा 251, तारी इब्ने असीर, जिल्द 3, पेज 291)

ऐ अबु समामा तुमने नमाज़ का तज़करह किया ख़ुदा वन्दे आलम तुम्हें नमाज़ गुज़ारों में करार दे।

नअम, हाज़ा अव्वला वक़्तेहा, सलूहुम अँयकुफ्फु अन्ना हत्ता नुसल्लिया।

(मक़तल मुक़र्रम, पेज 244, तारीख़े तबरी, जिल्द 6, पेज 251, तारीख़, जिल्द 3, पेज 291)

जी हां! ये नमाज़ का अव्वल वक़्त है, दुश्मन से कहो कि जंग को मौक़ूफ़ कर दें ताकि हम अपनी नमाज़ अदा कर सकें।

इमाम[अ0] ने इस जुम्ले को पहले जुम्ले के मिस्ल दो ऐलान से मिला दिया है जो अबु समामा सैदावी असदी इमाम के असहाब के जवाब में इर्शाद फ़रमाया : जबकि जंग की शिद्दत के दरमियान मुतवज्जे हुए कि अव्वल ज़ोहर का वक़्त हो गया है लिहाज़ा आंहज़रत से अर्ज़ किया : बेनफ़सी, मेरी जान आप पर कुर्बान हो! अगरचे ये लोग अपने हमलों को जारी रखे हुए हैं, लेकिन ख़ुदा की क़सम! जब तक मुझे क़त्ल नहीं कर देते आप तक हरगिज़ दस्तरसी हासिल नहीं कर सकते और मैं चाहता हूं कि जिस वक़्त ख़ुदा की बारगाह में जाऊं तो आपको इमामत में अपनी आख़िरी नमाज़ बजा लाऊं।

नअम अन्ता इमामी फिल जन्नह

ऐ सईद! तुम हमसे पहले ही जन्नत में पहुंच जाओगे।

आशूरा के रोज़ नमाज़े ज़ोहर की अदाएगी के लिए इमाम हुसैन[अ0] की तरफ़ से हमला बन्द करने की तजवीज़ से अमलन मवाफ़ेक़त हासिल न कर सकी और आंहज़रत ने भी बग़ैर मुतवज्जे हुए दुश्मनों की तीरों की बौछार में ख़ैमों के बाहर और अहले कूफ़ा के ही सामने सफ़ बस्ता नमाज़ के लिए खड़े हुए और चन्द जांनिसार असहाब मिनजुम्ला सईद बिन अब्दुल्लाह और उमरो बिन क़र्ज़ा कअ्बी आंहज़रत के सामने सीना सिपर बनकर खड़े हो गए और जो तीर इमाम[अ0] की तरफ़ आते थे उन्हें अपने सीने और सर पर लेते थे उसी की बिना पर यही दोनों नमाज़ के बाद ज़मीन पर गिर गए और दर्जए शहादत पर फ़ाएज़ हो गए।

सईद आंहज़रत की नमाज़ के बाद शदीद ज़ोअ्फ़ के साथ और ख़ूं आलूद ज़मीन पर गिरे, अपनी आंख खोला और इमाम[अ0] को अपने क़रीब पाया कि जो ज़मीन पर बैठे हैं और ख़ाक व

ख़ून को उनके चेहरे से साफ़ कर रहे हैं, इमाम[अ0] की इस मुहब्बत के मुक़ाबिल में सर और पैर की पहचान नहीं होती थी, इस तरह से अर्ज़ किया : अवफ़ैता यब्ना रसूलिल्लाह!

ऐ फ़रज़न्दे रसूले ख़ुदा! क्या मैंने अपने फ़रीज़े को अहसन तरीक़े से अंजाम दिया है?

इमाम[अ0] ने भी उनके जवाब में फ़रमाया : जी हां! तुम मुझसे पहले बहिश्त में दाख़िल हो जाओगे।

ऐ उमरो! तुम भी मुझसे पहले बहिश्त में पहुंचोगे तो मेरी तरफ़ से रसूले ख़ुदा को सलाम पहुंचाना और उनसे अर्ज़ करना कि मैं भी तुम्हारे पीछे उनकी ख़िदमत में जल्द ही आ रहा हूं, उमरो बिन क़र्ज़ा जो सईद के पास गिर गए थे कि किस तरह आंहज़रत उन्हें यक़ीन जन्नत का वादा कर रहे थे और उन्होंने भी वैसा ही सवाल इमाम[अ0] से किया : अव फइता यब्ना रसूलिल्लाह!

मैंने भी भी अपनी ज़िम्मेदारी को अच्छी तरह से पूरी कर दी?

इमाम[अ0] ने भी वही जवाब दिया जो सईद को दिया था और इस जुम्ले के इज़ाफ़े के साथ कि मेरा सलाम रसूले ख़ुदा को पहुंचाना और उनसे अर्ज़ करना कि मैं (हुसैन) कुछ लम्हात में आपके दीदार के लिए आज़िम हैं।

●●●

मद्हे इमाम ज़ैनुल आबेदीन[अ0]

अल्लामा कलीम इलाहाबादी[ता-ब-सराह]

गर पैरवी इतरते अतहार नहीं है
फिर और कोई चीज़ है, किरदार नहीं है

जिस दिल में नहीं सय्यदे सज्जाद[अ0] की उलफ़त
क्या सजदए ख़ालिक़ से वो बेज़ार नहीं है

रखते नहीं गर हज़रते सज्जाद[अ0] की उलफ़त
फिर कौनसा सजदा है जो बेकार नहीं है

जिस्मों को नहीं ज़हनों को दे देता है सेहत
ये कुल का मसीहा है, ये बीमार नहीं है

सज्जाद[अ0] से क्यों करते हो बैअत की तवक्को
क्या ये पिसरे हैदरे कर्रार नहीं है

दरबार में ज़ालिम के पढ़ा इस तरह ख़ुतबा
लगता था कि ये शाम का दरबार नहीं है

तोड़ा गया ख़ुतबे को मोअज़्ज़िन की अज़ां से
क्या हैबते आबिद का ये इक़रार नहीं है

तारीख़ है शाहिद कि तू है फ़ातहे दरबार
माना कि तेरे हाथ में तलवार नहीं है

दर अस्ल ये हुर्रियते फ़िक्र की आवाज़
आबिद तेरी ज़ंजीर की झंकार नहीं है

जब बज़्म में हर सिम्त हैं सज्जाद के अनवार
फिर कौन है जो मरकज़े अनवार नहीं है

तजरबे की बातें

रईसुल वाएज़ीन मौ0 सै0 कर्रार हुसैन वाएज़[ता-ब-सराह]

आप उन लोगों को ही ज़्यादा अकड़ कर चलते हुए देखेंगे जिनमें दरहक़ीक़त कोई बात ऐसी नहीं जिस पर वो फ़ख़्र कर सकें।

बात बढ़ा-चढ़ाकर बयान करने से रफ़्ता रफ़्ता झूठ बोलने की आदत पड़ जाती है। याद रखिये झूठ बोलना गुनाह बेलज़्ज़त है।

काम को उसके वक़्त और तरीक़ा पर अंजाम देने के बाद शौक़ से उसके नतीजा का इन्तेज़ार कीजिए।

यकायक मशहूर और दौलतमन्द बन जाने की हवस दिल से निकाल दीजिए वरना ये हवस आपको पागल बना देगी।

इल्म व अक़्ल दौलत से ज़्यादा क़ीमती हैं क्योंकि दौलत से इल्म व अक़्ल नहीं हासिल हो सकते, मगर इल्म व अक़्ल से दौलत हासिल की जा सकती है।

ग़लती पर अड़े रहने की कोशिश न कीजिए वरना आप दूसरों के मशवेरे से महरूम हो जाएंगे। ●●●

इस्तेफ़ताआत(22)

आयतुल्लाहिल उज़्मा सय्यद अली हुसैनी सीस्तानी मुद-द-ज़िल्लहुल आली
आयतुल्लाहिल उज़्मा सय्यद अली हुसैनी ख़ामेनई मुद-द-ज़िल्लहुल आली

मौलाना फ़ीरोज़ अली बनारसी

स0—जबीरा किसे कहते हैं?

ज0—जबीरा वो चीज़ है कि जिसके ज़रिये ज़ख़्म और टूटे को बांधा जाता है, या वो दवा है जो ज़ख़्म वग़ैरा पर लगाई जाती है।

तवज्जो—जिस शख़्स के किसी एक अज़ू पर जबीरा हो और वो पाक है, तो अगर वो उसे बग़ैर किसी ज़हमत व मशक़्क़त के खोल सकता हो और पानी उसके लिए नुक़्सानदेह न हो, तो उस पर वाजिब है कि जबीरा को खोल दे और पानी उस अज़ू तक पहुंचाए। और अगर नहीं खोल सकता है, लेकिन जबीरा ऐसी चीज़ का है कि उससे पानी अज़ू तक पहुंच जाता है, तो अज़ू तक पानी पहुंचाना वाजिब है, चाहे वो अज़ू को पानी में डिबोने के ज़रिये हो या बार बार पानी डालने से ताकि पानी खाल तक पहुंच जाए।

स0—अगर धोए जाने वाले आज़ा पर जबीरा हो तो क्या हुक्म है?

ज0—इसकी तमाम सूरतें हैं : ज़ख़्म का ऊपरी हिस्सा खुला है :

अ : पानी ज़ख़्म के लिए नुक़्सानदेह नहीं है, तो मामूल के मुताबिक़ वज़ू करे।

ब : पानी नुक़्सानदेह है तो उसके अतराफ़ को धोना काफ़ी है और बिना बर एहतियात व मुस्तहब तर हाथ जबीरा के ऊपर फेरे।

ज़ख़्म का ऊपरी हिस्सा बन्द है :

अ : उसे खोलना मुम्किन है और पानी भी नुक़्सानदेह नहीं है, तो उसे खोल ले और मामूल के मुताबिक़ वज़ू करे।

ब : खोलना मुम्किन है, लेकिन पानी नुक़्सानदेह है और तर हाथ फेरने में कोई नुक़्सान नहीं है, तो वाजिब है कि उस पर हाथ फेरे।

उसे खोलना मुम्किन नहीं है जबीरा पाक है तो उस पर हाथ फेरे।

जबीरा नजिस है और उसे पाक करना मुम्किन नहीं है, तो मशहूर ये है कि एक कपड़ा जो कि जबीरा का हिस्सा शुमार हो, उस पर रख दे और उस कपड़े पर तर हाथ फेरे।

अगर ये भी मुम्किन न हो, तो एहतियाते वाजिब है कि वज़ू भी करे और तयम्मुम दोनों करे।

आयतुल्लाह सीस्तानी—अगर जबीरा तयम्मुम की जगह पर हो, तो तयम्मुम करे, वरना एहतियाते वाजिब है कि वज़ू और तयम्मुम दोनों करे।

स0—अगर जबीरा मसह किए जाने वाले हिस्से पर हो तो फ़रीज़ा क्या है?

ज0—इसकी भी चन्द सूरतें हैं।

1. ज़ख़्म का ऊपरी हिस्सा खुला है :

अ : मसह के लिए जगह बाक़ी है, तो पानी बचे हिस्से पर मसह करे और वज़ू सही है।

ब : मसह के लिए जगह नहीं बची है तो उसकी दो सूरतें हैं:

पहली सूरत : वहां पर कपड़ा रखना मुम्किन है, तो उस पर एक पाक कपड़ा रखे और उस कपड़े पर वज़ू के पानी की तरी से मसह करे।

आयतुल्लाह सीस्तानी—बिना बर एहतियात तयम्मुम कर ले और बिना बर एहतियात

वज़ू जबीरा भी करे।

दूसरी सूरत : कपड़ा रखना मुम्किन नहीं है, तो तयम्मुम करे।

2. ज़ख़्म का ऊपरी हिस्सा बंधा हुआ है :

अ : ज़ख़्म या जबीरा पाक है तो मामूल के मुताबिक़ वज़ू जबीरा करे।

ब : ज़ख़्म या जबीरा नजिस है तो उसकी दो सूरतें हैं :

पहली सूरत : उसे पाक करना मुम्किन है, तो उसे पाक करे और उस पर तर हाथ से मसह करे।

दूसरी सूरत : उसे पाक करना और ज़ख़्म पर पानी पहुंचाना मुम्किन नहीं है तो :

आयतुल्लाह ख़ामेनई : उस पर एक पाक कपड़ा रखे, इस तरह कि वो जबीरा का हिस्सा शुमार हो और उस पर तर हाथ से मसह कर ले और अगर ये भी मुम्किन न हो, तो बिना बर एहतियाते वाजिब वज़ू भी करे और तयम्मुम भी।

आयतुल्लाह सीस्तानी– उसी तरी से सर और पैर का मसह करे।

स0–अगर जबीरा हथेली और उंगलियों पर हो तो मसह के वक़्त क्या करना चाहिए?

ज0–आयतुल्लाह सीस्तानी– उसी तरी से सर और पैर का मसह करे।

स0–आज़ाए वज़ू या गुस्ल पर कोई ऐसी चीज़ है जो पानी के खाल तक पहुंचने में रुकावट है और उसे हटाना भी मुम्किन नहीं है, ज़हमत व मशक़्क़त है, तो उसका क्या हुक्म है?

ज0–आयतुल्लाह ख़ामेनई– जबीरा वाला हुक्म है।

आयतुल्लाह सीस्तानी– अगर दवा के अलावा जैसे अलक़तरा वग़ैरह हो, तो तयम्मुम करे और अगर तयम्मुम की जगह पर हो, तो वज़ू जबीरा भी करे और तयम्मुम भी। अगर दवा हो तो जबीरा का हुक्म है।

स0–आज़ाए वज़ू में मुख़्तलिफ़ जबीरा की मिक़्दार और उसका हुक्म क्या है?

ज0– (1) अज़ू के एक हिस्से को घेरे रहे तो वज़ू जबीरा करे।

(2) पूरे अज़ू को घेरे रहे तो वज़ू जबीरा करे।

(3) ज़्यादा तर आज़ाए वज़ू को घेरे है तो

आयतुल्लाह सीस्तानी– बिना बर एहतियात तयम्मुम करे और वज़ू जबीरा भी करे।

आयतुल्लाह ख़ामेनई– तयम्मुम करे।

(4) सारे आज़ा को घेरे है तो

आयतुल्लाह सीस्तानी– बिना बर एहतियाते वाजिब वज़ू जबीरा भी करे और तयम्मुम भी।

स0–अगर जबीरा मामूल से ज़्यादा ज़ख़्म के अतराफ़ को घेरे हो तो फ़रीज़ा क्या है?

ज0–अ : उसे हटाना मुम्किन है, तो उसे हटा दे और मामूल के मुताबिक़ वज़ू करे।

ब : अगर हटाना मुम्किन नहीं है तो

आयतुल्लाह ख़ामेनई : जबीरा के हुक्म पर अमल करे और बिना बर एहतियाते वाजिब तयम्मुम भी करे।

आयतुल्लाह सीस्तानी : तयम्मुम करे और अगर जबीरा तयम्मुम के मक़ामात पर हो, तो वज़ू और तयम्मुम दोनों करे।

स0–अगर आज़ाए वज़ू पर ज़ख़्म व जराहत और टूटा फूटा न हो, लेकिन किसी दूसरी वजह से पानी नुक़सानदेह है तो हुक्म क्या है?

ज0–आयतुल्लाह ख़ामेनई– अगर पूरे हाथ या जबीरा के लिए नुक़सानदेह है, तो तयम्मुम करे और अगर हाथ के कुछ हिस्से या जबीरा के बाज़ हिस्से के लिए नुक़सानदेह है तो अतराफ़ को पानी से धोए और एहतियातन तयम्मुम भी करे।

आयतुल्लाह सीस्तानी– तयम्मुम करे।

स0–अगर चेहरा या आंखों में शिकस्तगी हो तो खुली हुई है और पानी नुक़सानदेह है तो वज़ू का क्या हुक्म है?

ज0–आयतुल्लाह ख़ामेनई– वज़ू जबीरा करे।

आयतुल्लाह सीस्तानी– तयम्मुम करे।

मसला–अगर इन्सान को मालूम हो कि उसके आज़ाए वज़ू पर कोई चीज़ चिपकी हुई है और शक करे कि पानी के खाल तक पहुंचने से माने है या नहीं, तो उस पर लाज़िम है कि उस चिपकी हुई चीज़ को हटाए या उसके नीचे तक पानी पहुंचाए।

स0–अगर वज़ू करने के बाद आज़ाए वज़ू पर कोई ऐसी चीज़ देखे जो खाल तक पानी पहुंचने की राह में माने हो, तो क्या हुक्म है?

ज0–इसकी चन्द सूरतें हैं :

अ : उसे मालूम है कि ये चीज़ वज़ू करने से पहले मौजूद थी, तो उसका वज़ू बातिल है।

ब : वो जानता है कि ये चीज़ वज़ू करने के बाद चिपकी है, तो उसका वज़ू सही है।

ज : उसे नहीं मालूम है कि वज़ू से पहले या वज़ू के बाद लगी है, तो

आयतुल्लाह ख़ामेनई– अगर जान जाए कि वज़ू करते वक़्त उस माने की तरफ़ मुतवज्जे नहीं था, तो बिना बर एहतियाते वाजिब दोबारा वज़ू करे।

आयतुल्लाह सीस्तानी–दोनों सूरतों में उसका वज़ू सही है।

स0–अगर आज़ाए वज़ू या गुस्ल में से कोई अज़ू नजिस हो और आदमी वज़ू या गुस्ल करने के बाद शक करे कि वज़ू या गुस्ल पहले से पाक किया था या नहीं, तो क्या हुक्म है?

ज0– अ : वज़ू या गुस्ल के बातिल होने के सिलसिले में :

1. उसे इल्म है या एहतेमाल दे रहा है कि वज़ू या गुस्ल के वक़्त उस अज़ू के नजिस होने की तरफ़ मुतवज्जे था, तो उसका वज़ू और गुस्ल सही है।

2. उसे मालूम है कि वज़ू या गुस्ल करते वक़्त वो उस अज़ू के नजिस होने की जानिब मुतवज्जे नहीं था तो

आयतुल्लाह सीस्तानी– उसका वज़ू और गुस्ल सही है।

आयतुल्लाह ख़ामेनई–उसका वज़ू और गुस्ल बातिल है।

ब : नजिस जगह के पाक करने के सिलसिले में :

बहरसूरत में चाहिए कि उसे मालूम हो कि वज़ू या गुस्ल के वक़्त उसके नजिस होने की तरफ़ मुतवज्जे था या नहीं था, या शक करे तो जो जगह नजिस है, उसे पाक करे नीज़ वो चीज़ें जिन तक निजासत के सरायत करने का यक़ीन है, उसे भी पाक करे।

मसला : जिसे ये मालूम न हो कि उसका फ़रीज़ा तयम्मुम है या वज़ू जबीरा, तो बिना बर एहतियाते वाजिब दोनों बजा लाए।

स0–अगर नाख़ून के नीचे या खाल में ख़ून मर्दगी पैदा हो जाए, तो क्या हुक्म है?

ज0–अगर ख़ून मर्दगी ज़ाहिर नहीं है तो मामूल के मुताबिक़ वज़ू करे।

अगर ख़ून मर्दगी ज़ाहिर है :

1. अगर उसे निकालने में ज़हमत व मशक़्क़त न हो तो उसे निकाल दे और मामूल के मुताबिक़ वज़ू करे।

2. अगर उसे निकालने में ज़हमत व मशक़्क़त हो तो

आयतुल्लाह ख़ामेनई– वज़ू जबीरा करे।

आयतुल्लाह सीस्तानी– तयम्मुम करे।

स0–जिस शख़्स ने गुस्ल जबीरा या वज़ू जबीरा किया है, क्या जबीरा का उज़्र बरतरफ़ होने के बाद दोबारा गुस्ल कर ले?

ज0–आयतुल्लाह ख़ामेनई– इन्सान ने वज़ू जबीरा के साथ जो नमाज़ अदा की है, वो सब सही हैं और जब उज़्र बरतरफ़ हो जाए, तो बाद वाली नमाज़ों के लिए भी वज़ू न करे। लेकिन अगर उसे मालूम न हो कि उसका फ़रीज़ा जबीरा है या तयम्मुम और दोनों को अंजाम देदे तो बाद वाली नमाज़ों के लिए वज़ू करे।

आयतुल्लाह सीस्तानी– इन्सान ने वज़ू जबीरा के साथ जो नमाज़ें पढ़ी हैं, वो सही हैं और वो उसी वज़ू से बाद वाली नमाज़ें भी पढ़ सकता है।

●●●

इस्लामी दुनिया से...

मौलाना फ़ीरोज़ अली बनारसी

अमेरिका ईरान के मुक़त्दर निज़ामे हुकूमत को झुका नहीं सकता

इस्लामी जमहूरिये ईरान के सदर डाक्टर हसन रुहानी ने तेहरान में पार्लियामेण्ट में नये साल का बजट पेश किए जाने के मौक़े पर अपने ख़िताब में कहा कि अमेरिकी हुकमरां ख़ित्ते में ईरान को अपने लिए बड़ी रुकावट समझते हैं इसी लिए वो इस्लामी जमहूरिए ईरान में ताक़तवर निज़ामे हुकुमत को कम्ज़ोर करना चाहते हैं जबकि इस्लामी जमहूरिये इस्लाम पहले से कहीं ज़्यादा मुस्तहक़म, ताक़तवर और मुक़्तदरर शक्ल में तमाम साज़िशों के मुक़ाबले में डरना रहेगा। डा0 रुहानी ने कहा कि अमेरिकी, ईरान की तवानाई से हरासां हैं और वो मग़रिबी ऐशिया के हस्सास इलाक़े में ईरान को अपनी राह में सबसे बड़ी रुकावट समझते हैं इसी लिए वो ईरान के मुक़ाबले में मसाएल पैदा करते रहते हैं। उन्होंने कहा कि अमेरिका दावा कर रहा था कि वो आलमी सतह पर ईरान को तन्हा कर देगा मगर इस वक़्त वो ख़ुद आलमी सतह पर बिल्कुल तन्हा पड़ गया है जबकि ऐटमी मुआहदे से उसकी अलाहेदगी और ईरान मुख़ालिफ़ पाबन्दियों की बहाली में भी आलमी इदारों, अक़वामें मुत्तहदा की सलामती कौंसिल और ऐटमी तवानाई की बैनुलअक़वामी एजेंसी नेज़ तमाम मुमालिक ने अमेरिका का कोई साथ नहीं दिया।

2018 की मईशत की तबाही का साल साबित

ख़ैबर सहयूनी तहक़ीकाती वबगाह के मुताबिक़, फ़लस्तीन के इलाक़े ग़ज़ह की पट्टी की लेबर यूनियन के चेयरमैन ने कहा कि 2018 ई. ग़ज़ह की मईशत की तबाही का साल साबित हुआ है। उनका कहना है कि रवां साल के दौरान ग़ज़ह में ग़ुरबत और बेरोज़गारी के नये रिकॉर्ड क़ायम किए गए हैं। फ़लस्तीन लेबर यूनियन के चेयरमैन अली अलहायक ने एक बयान में कहा कि 2018 ई. ग़ज़ह में इक़्तिसादी शहर नमो, सामायाकारी, रोज़गार और ग़ुरबत के हवाले से बदतरीन साल साबित हुआ है। उनका कहना था कि ग़ज़ह की पट्टी की मआशी अबतरी की कई वजूहात हैं जिनमें इज़्राईल की मुसल्लतकर्दा नाकाबन्दी, फ़लस्तीनी अथॉरिटी की इन्तेक़ामी पाबन्दियां और फ़लस्तीनी धड़ों में पाये जाने वाले इख़्तेलाफ़ात अहमतरीन वजूहात हैं।

क़िबले अव्वल की बार बार बेहुरमती नाक़ाबिले बर्दाश्त

ख़ैबर सहयूनी तहक़ीकाती वेबगाह के मुताबिक़, अरदनी वज़ीर बराए औक़ाफ़ और मज़हबी आमूर डा0 अब्दुल नासिर अबुलबसल ने एक बयान में कहा कि सहयूनी रियासत और यहूदी इन्तिहापसन्द एक सोचे समझे मंसूबे के तहत मस्जिदे अक़्सा का तक़द्दुस पामाल कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि आए दिन यहूदी आबादकार मस्जिदे अक़्सा, बाबुल मग़ारिबा, बाबुलरहमा और बाबुलरहमा क़ब्रिस्तान और कुद्स के दीगर इस्लामी मक़ामात की बेहुरमती करते हैं। अबुलबसल का कहना था कि इज़्राईल का फ़लस्तीनी शहरियों को बाबुर्रहमा के क़िब्ले अव्वल में दाख़िल होने से रोकना मुसलमानों मज़हबी उमूर में मुदाख़लत के मुतारादिफ़ है। उरदनी वज़ीर ने क़िब्ले अव्वल की बेहुरमती और उसके नतीजे में मुसमानों में पाये जाने वाले ग़म व ग़ुस्से के संगीन नताएज की तमामतर ज़िम्मेदारी इज़्राइल पर आयद की और कहा कि इज़्राइल को क़िब्ले अव्वल की बेहुरमती से हर सूरत में बाज़ आना होगा।

आयतुल्लाह शेख़ ईसा क़ासिम लंदन से इराक़ रवाना

बहरैन के रहबरे आला आयतुल्लाह शेख़ इसा क़ासिम चन्द माह क़ब्ल इलाज के लिए लंदन गए थे, अब मुक़म्मल सेहतयाबी के बाद इराक़ रवाना हो गए हैं। आयतुल्लाह शेख़ इसा क़ासिम के बेटे का कहना है कि वो मक़ामाते मुक़द्दसा की ज़ियारात की ग़रज़ से इराक़ जा रहे हैं और बहुत जल्द बहरैन वापस आ जाएंगे। उन्होंने कहा कि शेख़ इसा

क़ासिम की सेहत उस वक़्त से ख़राब चली आ रही थी जब से हुक्मरानों की जानिब से सियासी इन्तेक़ाम के तहत उनकी शहरियत जून 2016 ई. में मंसूख़ करके उनके आबाई इलाक़े अलदराज़ में उनके घर का मुहासरा कर लिया था। बहरैनी अवाम की जानिब से भरपूर ऐहतजाजी मुज़ाहरों के बाद आले ख़लीफ़ा हुकूमत मजबूर हो गई कि वो शेख़ इसा क़ासिम को इलाज के लिए बैरुने मुल्क जाने की इजाज़त दे।

इज़्राईल दुनिया की मुजरिम और दहशतगर्द रियासत है

ख़ैबर सहयूनी तहक़ीकाती वेबगाह के मुताबिक़, तुर्की के सदर ने एक बयान में इज़्राइली वज़ीरे आज़म पंजमन नेतन्याहू के इस इल्ज़ाम का जवाब दिया जिसमें नेतन्याहू ने कहा था कि इर्दोगान और तुर्क फ़ौज शुमाली कबरस में बच्चों को क़त्ल कर रहे हैं। इर्दोगान ने नेतन्याहू को मुख़ातिब करते हुए कहा कि इज़्राईली वज़ीरे आज़म ने गलत दरवाज़े पर दस्तक दी है।

इर्दोगान ज़ालिम नहीं बल्कि मज़लूमों की आवाज़ है। जहां तक तुम्हारा तअल्लुक है तो तुम ज़ालिम हो और तुम्हारी रियासत दहशतगर्दी की मुर्तकिब है। उन्होंने कहा कि इज़्राइल को तुर्की पर दहशतगर्दी का इल्ज़ाम आयद करने से क़ब्ल अपने गरेबान में झांकना चाहिए। इंसानियत के ख़िलाफ जराएम, क़त्ल आम और वसीय पैमाने पर तबाही इज़्राईली रियासत का चलन है।

डेनमार्क की शहरियत हासिल करने के लिए हाथ मिलाना लाज़मी

डेनमार्क की शोहरियत हासिल करने वालों को तक़रीब में हुक्काम को हाथ मिलाना होगा, हाथ न मिलाने वालों को डेनमार्क की शोहरियत नहीं मिलेगी। ज़राए के मुताबिक़ डेनमार्क में इस नए क़ानून की मंजूरी के बाद बाज़ हलक़ों रद्दे अमल सामने आया है। उनका कहना है कि डेनमार्क में चेहरा छुपाने पर पाबन्दी का क़ानून पहले ही नाफ़िज़ुल अमल है। नई क़ानूनसाज़ी मुसलमानों को निशाना बनाने का अमल है, शरई क़वानीन के मुताबिक़ मुसलमान ख़्वातीन और मर्दों के लिए नामहरम मर्द और ख़्वातीन से हाथ मिलाना जाएज़ है।

मुसलमान ख़ातून इज़्राईल की हिमायत न करने पर नौकरी से बरतरफ़

अमेरिकी रियासत टेक्सास के एक स्कूल ने मुस्लिम ख़ातून पैथालॉजिस्ट को इज़्राइल की हिमायत से मुतअल्लिक़ हलफ़ उठाने से इंकार पर नौकरी से फ़ारिग़ कर दिया। मुसलमान ख़ातून बाहया अमावी गुज़िश्ता 9 साल से इंडिपेंडेण्ट स्कूल (पी0आई0एस0डी0) में बतौर उस्ताद बच्चों की 'स्पीच पैथालॉजिस्ट' ज़िम्मेदारियां अहसन अंदाज़ में निभा रही थीं। मुतासिरा टीचर का कहना है कि सालाना बुनियादों पर मुआहदे की तजदीद के लिए आफर लेटर दिया जाता था जो कि गुज़िश्ता 9 साल से एक जैसा था ताहम इमसाल दिए गए आफर लेटर के मतन में तब्दीली की गई थी। उन्होंने बताया कि रवां साल के कन्ट्रेक्ट में एज़ाफ़ी नुकात शामिल किए गए जिसमें इज़्राइल का बाईकाट न करने का पाबन्द किया गया और हलफ़िया तौर पर मुआहदे के दौरानिये इज़्राईल का मआशी या किसी भी तरह का बाईकाट न करने का वादा मांगा गया था। इज़्राईल से वफ़ादारी का हलफ़ न लेने पर टीचर को नौकरी से निकाल दिया गया और स्कूल के इस फ़ैसले के ख़िलाफ़ मुतासिरा ख़ातून ने क़ानूनी चाराजूई करते हुए अदालत से रुजु कर लिया। ख़ातून के फ़ैसले को चैलेंज करते हुए अदालत में मौक़फ़ अपनाया कि नौकरी से बरख़ास्त करना आज़ादी इज़हार राय के बुनियादी हुकूक़ के ख़िलाफ़वर्ज़ी है।

सदी की डील के निफ़ाज़ के लिए इज़्राईल की सऊदी को अहम पेशकश

ख़ैबर सहयून तहक़ीक़ाती वेबगाह के मुताबिक़, इज़्राईली टीवी चैनल सात की वेब साइट के तजज़ियाकार 'एतेमार तसूर' ने इंकेशाफ़ किया है कि इज़्राइल ने सदी की डील के निफ़ाज़ के लिए सऊदी अरब को पेशकश की है कि वो फ़लस्तीनी पनाह गज़ीनो को अपने मुल्क में जगह दे। इज़्राईली तरर्बाकार ने मज़ीद लिखा है कि शाम, लेबनान और इराक़ में पनाहगज़ीं फ़लस्तीनी सदी की डील की राह में सबसे बड़ी रुकावट हैं और अगर सऊदी अरब इस पेशकश को क़बूल कर लेता है तो इस मंसूबे के निफ़ाज़ की राह हमवार हो जाएगी। इज़्राईली तजरबाकार ने सऊदी अरब को एक अहम बात की याददहानी करवाते हुए लिखा है कि चूंकि सऊदी अरब की शुमाली सरहद इराक़ी शियों से जुड़ती है और जुनूबी सरहद यमनी शियों से जबकि सऊदी अरब के अन्दर मौजूद शियों की अक़लियत जिन्होंने 2011 में सऊदी अरब के ख़िलाफ़ क़याम किया था को सरकोब करने के लिए बेहतरीन तरीक़एकार ये है कि वो अपनी सरज़मीन में फ़लस्तीनी पनाहगज़ीनों को जगह देकर हुकूमत को इस्तेहकाम बख़्शे।

●●●